संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 351
पृष्ठ 8
रविवार
13 सितम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- वक्त के साथ ना फीका...

विचार- हिन्दी दिवसः अपनी ही भाषा के...

खेल- दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन...

संकुचित दायरे ने बनाया था यूपी को बीमारू : सीएम

हर बच्चे को पढ़नी और आत्मसात करनी चाहिए मोदी की पुस्तक 'एग्जाम वश्वरियर्स'– योगी।

युवा किताब नहीं पढ़ता, कहना अन्याय।

मुख्यमंत्री ने किया गोमती पुस्तक महोत्सव का शुभारंभ।

57,600 ग्राम पंचायतों में डिजिटल लाइब्रेरी।

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर बच्चे को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पुस्तक 'एग्जाम वॉरियर्स' जरूर पढ़नी और आत्मसात करनी चाहिए। यह कहना अन्याय होगा कि युवा किताब नहीं पढ़ता, जरूरत किताबों को उन तक पहुंचाने की थी। ज्ञान को संकुचित दायरे में सीमित करने के दुष्परिणाम समाज और राष्ट्र, दोनों को भुगतने पड़ते हैं। 10 वर्ष पहले उत्तर प्रदेश को 'बीमारू' राज्यों की श्रेणी में खड़ा कर दिया गया था। यूपी के नौजवान के सामने पहचान का संकट था और नागरिक पहचान बताने से बचते थे। सकारात्मक प्रयासों के परिणामस्वरूप आज प्रदेश की तस्वीर बदली है। डिजिटल युग ने शहर और गांव की दूरी को कम किया है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में 5वें गोमती पुस्तक महोत्सव–2026 का शुभारंभ करने के उपरांत युवाओं को संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय परिसर में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। बच्चों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पुस्तक 'एग्जाम वॉरियर्स' वितरित की। बोले, हर बच्चे को यह पुस्तक पढ़नी और आत्मसात करनी चाहिए। यह केवल स्कूली छात्रों के लिए नहीं, बल्कि हर युवा और नागरिकों के लिए भी उपयोगी है। जीवन में हर व्यक्ति को किसी न किसी परीक्षा से गुजरना पड़ता है। कभी डिग्री के लिए, कभी सर्टिफिकेट कोर्स के लिए और कभी जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में। जब मुश्किल समय में व्यक्ति की हिम्मत जवाब देने लगती है, तब 'एग्जाम वॉरियर्स' उसका संबल और मार्गदर्शक बन सकती है। सीएम के हाथों पुस्तक पाने वाले बच्चों के चेहरे खिल उठे। मुख्यमंत्री ने छात्राओं के साथ तस्वीर भी खिंचवाई।मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कहना कि युवा पुस्तकों से दूर हो गया या सोशल मीडिया पर अपना समय खराब कर रहा, पूरी तरह सही नहीं। ऐसा कहना युवा के साथ अन्याय होगा। जरूरत पुस्तकों को उसके पास पहुंचाने की व्यवस्था करने की है। जब पहली बार युवराज मलिक ने लखनऊ में पुस्तक महोत्सव का प्रस्ताव रखा था, तब तत्कालीन अपर मुख्य सचिव अवनीश अवस्थी से चर्चा की। इसे प्रोत्साहित करने की बात कही। इसके बाद लखनऊ में पुस्तक महोत्सव शुरू हुआ। अच्छा परिणाम मिला तो मैंने गोरखपुर में भी पुस्तक महोत्सव का सुझाव दिया। वहां लखनऊ से भी ज्यादा लोग पहुंचे और अधिक पुस्तकों की बिक्री हुई। इससे यह धारणा पूरी तरह गलत साबित हुई कि आज का युवा पुस्तक नहीं पढ़ता। समाज और राष्ट्र भी तब बीमार होता है, जब उसकी क्षमता समाप्त होने लगती है और वह अपनी विरासत से दूरी बनाने लगता है। पहले भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को संकुचित दायरे में बांधने का प्रयास किया गया, जिसके परिणाम सहने पड़े। उत्तर प्रदेश की धरती भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण केंद्र रही है। लखनऊ से 70 किलोमीटर दूर नैमिषारण्य में ऋषियों ने चिंतन और ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाया। काशी ज्ञान और संवाद की भूमि रही है। इसी प्रदेश के मुजफ्फरनगर स्थित शुक्रतीर्थ में करीब 5 हजार वर्ष पहले श्रीमद्भागवत महापुराण की पहली कथा के वाचन की परंपरा जुड़ी है। ऋषि परंपरा का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञान को सीमित नहीं किया जाना चाहिए। डिजिटल युग ने गांव और शहर की दूरी कम करने का काम किया है। उन्होंने ग्राम सचिवालयों का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले ग्राम प्रधान गांव की व्यवस्था अपने घर से संचालित करता था। सरकार ने ग्राम सचिवालय की व्यवस्था विकसित की और उसमें केवल प्रधान व ग्राम पंचायत अधिकारी के बैठने की व्यवस्था नहीं की बल्कि ग्रामीणों के लिए कॉन्फ्रेंस रूम और डिजिटल लाइब्रेरी भी बनाई। प्रदेश की 57,600 ग्राम पंचायतों में पुस्तकालय की व्यवस्था की गई है। इनमें नेशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं। पहले सरकारों ने युवाओं और ग्रामीणों को प्लेटफार्म नहीं दिया, इसके बावजूद प्रतिभा के कम उपयोग के लिए उनके बारे में गलत शब्दों का इस्तेमाल किया जाता था।बेसिक और माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों का उल्लेख करते हुए कहा कि पहले इन स्कूलों की स्थिति ऐसी थी कि उनके भवन और व्यवस्थाएं जर्जर नजर आती थीं। जब सरकारें ही जर्जर थीं तो सिस्टम का जर्जर होना स्वाभाविक था। प्रदेश में ऑपरेशन कायाकल्प के माध्यम से स्कूलों की तस्वीर बदली गई। युवाओं से अपील की कि वे अपनी जरूरत के अनुसार किताबें खरीदने और पढ़ने की आदत विकसित करें।

भारतीय सेना ने एलओसी पर आतंकी गतिविधियां बढ़ने और असामान्य सैन्य तैनाती के दावों को किया खारिज

नयी दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने सोशल मीडिया पर फैलाई जा रहीं जम्मू–कश्मीर में लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) के पास आतंकवादी गतिविधियों से जुड़ी खबरों का खंडन किया है। सेना ने स्पष्ट किया कि यह जानकारी फैलाने वाला अकाउंट पाकिस्तान से चलाया जा रहा प्रोपेगैंडा अकाउंट है। साथ ही, सेना ने लोगों को आगाह किया कि वे बिना पुष्टि किए दावों पर विश्वास न करें और न ही उन्हें आगे बढ़ाएं।दरअसल, सोशल मीडिया पर

यह खबर फैलाई गई कि लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) के पास आतंकवादी गतिविधियां बढ़ गई हैं। इनमें यह भी दावा किया गया कि भारतीय सेना ने उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा और बारामूला जिलों में बड़े सैन्य ठिकानों के पास रहने वाले लोगों से अपने घर खाली करने को कहा है। हालांकि, भारतीय सेना के फैक्ट चेक में यह दावे फर्जी पाए गए हैं। सेना ने एलओसी के पास आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि के दावों को खारिज किया है। साथ ही, उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा व बारामूला जिलों में प्रमुख सैन्य छावनियों के पास बने घरों को खाली करने जैसे आदेशों से इनकार किया है। भारतीय सेना के आधिकारिक फैक्ट चेक अकाउंट से एक्स पर पोस्ट में कहा गया, कश्मीर इंटेल नाम का एक्स अकाउंट ऐसी झूठी खबरें फैला रहा है, जिनमें दावा किया गया है कि लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) के पास आतंकवादी गतिविधियां बढ़ गई हैं। ये दावे उन खबरों से जोड़े जा रहे हैं, जिनमें कहा गया है कि भारतीय सेना ने उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा और बारामूला जिलों में बड़े सैन्य ठिकानों के पास रहने वाले लोगों से अपने घर खाली करने को कहा है।

यूएनएससी में सुधार अब टाला नहीं जा सकता

ब्रिक्स के मंच से पीएम मोदी का दुनिया को स्पष्ट संदेश

नयी दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मंच से वैश्विक संस्थाओं में सुधार की जरूरत को रेखांकित करते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में बदलाव की मांग उठाई है। उन्होंने कहा कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली में सुधार जरूरी है। प्रधानमंत्री ने ब्रिक्स देशों से अगले दो दशकों के लिए एक महत्वाकांक्षी एजेंडा तैयार करने और वैश्विक सुधारों के लिए ठोस प्रस्ताव सामने रखने का आह्वान किया। मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि सुधार की प्रक्रिया केवल वैश्विक संस्थाओं तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसकी शुरुआत संगठनों की अपनी आंतरिक कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने से भी होनी चाहिए। इसके लिए एक व्यापक रोडमैप तैयार करने की जरूरत है, जिसमें प्रतिनिधित्व, जवाबदेही और नियम–निर्माण को प्राथमिकता दी जाए। प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार को अपने संबोधन का अहम हिस्सा बनाया। उन्होंने कहा कि यूएनएससी में सुधार की प्रक्रिया को लंबे समय तक टाला नहीं जा सकता। इसके लिए बातचीत को एक निश्चित समय–सीमा और स्पष्ट परिणामों से जोड़ने की जरूरत है। मोदी का संदेश ऐसे समय आया है जब वैश्विक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व को लेकर विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं की ओर से लगातार सुधार की मांग उठती रही है। प्रधानमंत्री ने व्यापक प्रतिनिधित्व को प्रभावी वैश्विक शासन के लिए जरूरी बताया। उन्होंने वित्तीय संस्थानों के संदर्भ में भी मौजूदा व्यवस्था में बदलाव की जरूरत बताई। उनके मुताबिक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में वोटिंग पावर, नेतृत्व की जिम्मेदारियां और नीतिगत प्राथमिकताएं आज की आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि जो देश वैश्विक आर्थिक विकास को गति दे रहे हैं, उन्हें वैश्विक आर्थिक शासन को आकार देने में भी उचित भूमिका मिलनी चाहिए। उनके मुताबिक प्रतिनिधित्व केवल राजनीतिक संस्थाओं तक सीमित विषय नहीं है, बल्कि इसका संबंध अंतरराष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था से भी है। मोदी ने जवाबदेही और नियम–निर्माण को भी सुधार प्रक्रिया के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में सामने रखा।

मोदी सरकार को भारत का ऐतिहासिक कूटनीतिक दर्जा बहाल करने का प्रयास करना चाहिए : कांग्रेस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने ब्रिक्स को ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने और वैश्विक स्थिति को आकार देने वाला महत्वपूर्ण मंच बताते हुए शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा उनकी सरकार को भारत का ऐतिहासिक कूटनीतिक दर्जा बहाल करने का प्रयास करना चाहिए। ग्लोबल साउथ से तात्पर्य उन देशों से है जिन्हें अक्सर विकासशील, कम विकसित अथवा अविकसित के रूप में जाना जाता है और ये मुख्य रूप से अफ्रीका, एशिया और लातिन अमेरिका में स्थित हैं। पार्टी के विदेश विभाग के प्रमुख सलमान खुर्शीद ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर एक बयान में कहा कि भू–राजनीतिक टकराव,

आर्थिक दबाव, आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों, संघर्ष और जलवायु संकट के दौर में भारत को ब्रिक्स साझेदारों के साथ मिलकर एक न्यायसंगत और संतुलित विश्व व्यवस्था के निर्माण के लिए काम करना चाहिए, जो सभी लोगों के लिए सुरक्षा, समृद्धि और गरिमा सुनिश्चित कर सके। पूर्व विदेश मंत्री खुर्शीद ने कहा कि भारत को ब्रिक्स में नैतिक नेतृत्व और रणनीतिक स्पष्टता प्रदान करनी चाहिए तथा साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि, ष्भारत को नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, संप्रभु समानता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हुए अपने रणनीतिक और आर्थिक उत्थान पर भी ध्यान देना चाहिए।ष कांग्रेस नेता ने कहा, ष्प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा सरकार को भारत की ऐतिहासिक कूटनीतिक भूमिका और दर्जे को बहाल करने के लिए विशेष कदम उठाने चाहिए।

बंगाली हिंदुओं की संस्कृति को लेकर शुभेंदु का बड़ा आरोप, वाम–तृणमूल पर निशाना

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को आरोप लगाया कि राज्य में लंबे समय तक सत्ता में रहे वाम मोर्चा और तृणमूल कांग्रेस ने बंगाली हिंदुओं की सांस्कृतिक परंपराओं को खत्म करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि मौजूदा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार बंगाली हिंदुओं से जुड़ी विरासत और परंपराओं को फिर से बहाल करने की कोशिश कर रही है। शुभेंदु ने केस्टोपुर में गणेश पूजा का उद्घाटन करने के बाद कहा कि राज्य की सांस्कृतिक पहचान को कमजोर करने की कोशिश लगभग पांच दशकों से जारी है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में 34 साल के वाम मोर्चा शासन और 15 साल के तृणमूल कांग्रेस शासन का जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने जेल में बंद बांग्लादेशी हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास प्रभु की दयनीय स्थिति का भी उल्लेख किया जो मीडिया में प्रकाशित नवीनतम तस्वीरों से इंगित होता है। संबंधित तस्वीरों में चिन्मय कृष्ण दास प्रभु अपनी मां के पार्थिव शरीर के पास दुखी हालत में दिखते हैं। शुभेंदु ने कहा, चिन्मय प्रभु के आंसुओं ने दुनिया भर के सनातनियों को झकझोर दिया है।

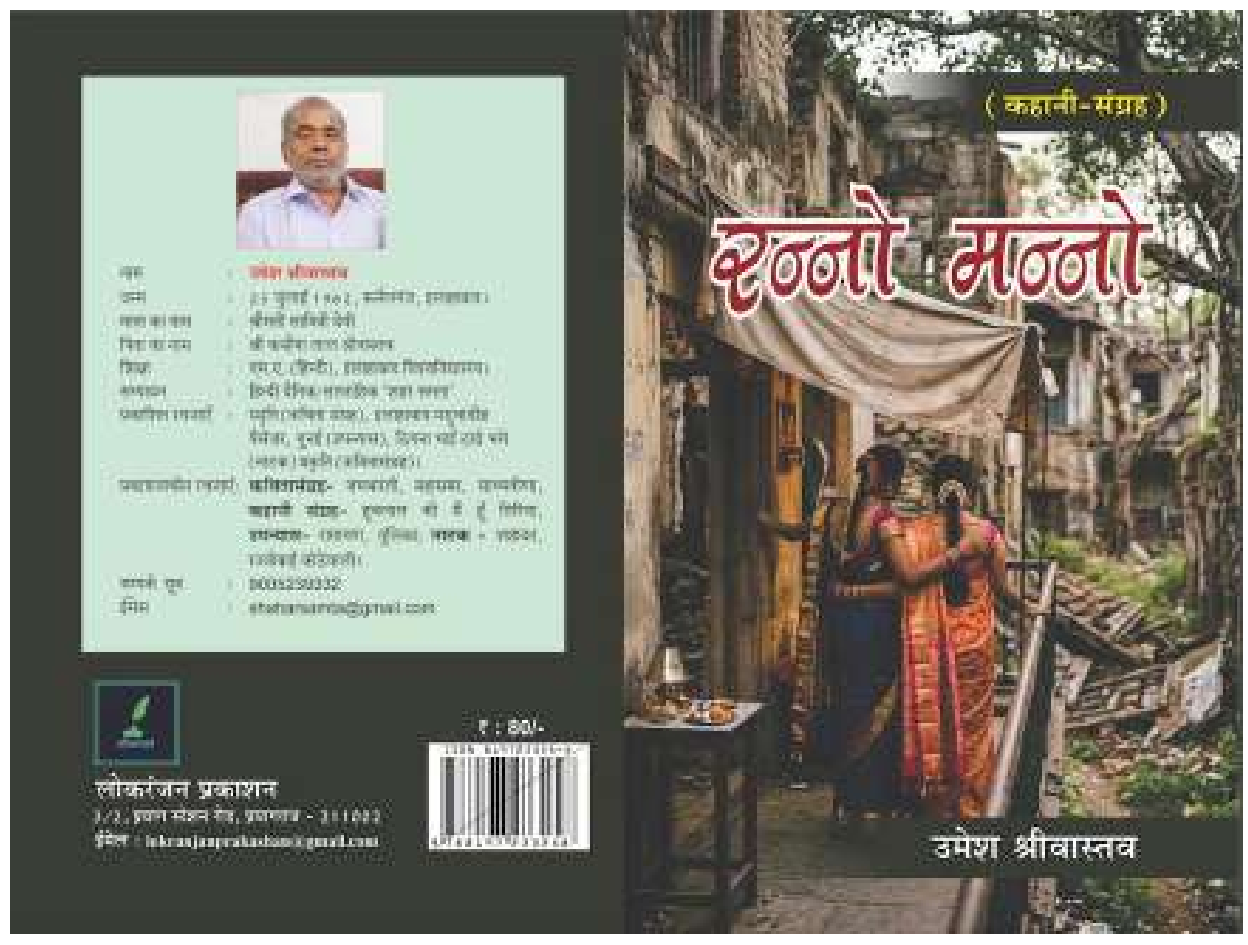

अनुसूचित जाति होने मात्र से एससी-एसटी एक्ट नहीं लगता, अपमान जाति के कारण होना जरूरी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि किसी व्यक्ति के अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य होने मात्र से एससी–एसटी एक्ट की धाराएं लागू नहीं हो जातीं। आरोपी का कृत्य ऐसा होना चाहिए, जिससे यह स्पष्ट हो कि उसने पीड़ित को उसकी जाति के कारण जानबूझकर अपमानित या प्रताड़ित किया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गाजियाबाद में जमीन के लेनदेन से जुड़े मामले में आरोपी राजू कुरैशी उर्फ उमरदराज के खिलाफ एससी–एसटी एक्ट के तहत चल रही कार्यवाही को निरस्त कर दिया है। हालांकि धोखाधड़ी, आपराधिक न्यासभंग, आपराधिक षड्यंत्र, गाली–गलौज और धमकी के आरोपों में मुकदमे की कार्यवाही जारी रहेगी। यह आदेश न्यायमूर्ति संतोष राय की एकलपीठ ने दिया। गाजियाबाद के लोनी थाने में वर्ष 2025 में याची के खिलाफ एससी–एसटी एक्ट के साथ जालसाजी, धोखाधड़ी और अन्य आरोपों में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी।

ट्रायल कोर्ट ने आरोपपत्र का संज्ञान लेते हुए आरोपी को समन जारी किया था। इसके खिलाफ याची ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर समन/संज्ञान आदेश सहित पूरी आपराधिक कार्यवाही निरस्त करने की मांग की। याची के अधिवक्ता मोहम्मद समीउज्जमा खान ने दलील दी कि मामला बंथला गांव के खसरा संख्या 1245 से जुड़ी जमीन के लेनदेन का है। मूल रूप से यह दीवानी विवाद है, जिसे आपराधिक रंग दिया गया। कथित जातिसूचक टिप्पणी को सार्वजनिक रूप से किए जाने का भी कोई स्पष्ट आरोप नहीं है। हाईकोर्ट ने एफआईआर और केस डायरी का अवलोकन करने के बाद पाया कि रिकॉर्ड पर ऐसी कोई सामग्री नहीं है, जिससे यह साबित हो कि आरोपी ने पीड़ित को उसकी जाति के आधार पर जातिसूचक शब्द कहे या जानबूझकर अपमानित किया। कोर्ट ने यह भी पाया कि अभियोजन यह प्रदर्शित नहीं कर सका कि कथित अपमान सार्वजनिक रूप से हुआ था और आरोपी का उद्देश्य पीड़ित को अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य होने के कारण अपमानित करना था।

अदालत ने स्पष्ट किया कि केवल पीड़ित के एससी/एसटी समुदाय से संबंधित होने के आधार पर एससी–एसटी एक्ट की धाराएं नहीं लगाई जा सकतीं। अपराध के आवश्यक तत्वों का आरोप और प्रथमदृष्टया समर्थन करने वाली सामग्री रिकॉर्ड पर होना जरूरी है। हाईकोर्ट ने आपराधिक अपील को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए एससी–एसटी एक्ट के तहत जारी समन/संज्ञान आदेश रद्द कर दिया। वहीं धोखाधड़ी, आपराधिक न्यासभंग, आपराधिक षड्यंत्र, गाली–गलौज और धमकी से जुड़े आरोपों में ट्रायल जारी रखने का आदेश दिया।

सीएम योगी 14 सितंबर को आ सकते हैं संगमनगरी, हाईकोर्ट में प्रस्तावित है कार्यक्रम

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की कार्यकारिणी की शुक्रवार को आपातकालीन बैठक की गई। इसमें बताया गया कि मुख्यमंत्री का कार्यक्रम 14 सितंबर 2026 (सोमवार) को शाम चार बजे हाईकोर्ट के क्रिकेट मैदान में आयोजित किया जाएगा।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की कार्यकारिणी की शुक्रवार को आपातकालीन बैठक की गई। इसमें बताया गया कि मुख्यमंत्री का कार्यक्रम 14 सितंबर 2026 (सोमवार) को शाम चार बजे हाईकोर्ट के क्रिकेट मैदान में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री ने स्वीकृति दी है। अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश पांडे व महासचिव अखिलेश कुमार शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम की तैयारी पूरी कर ली गई। बताया कि एसोसिएशन का वार्षिक चुनाव पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 17 सितंबर 2026 (बृहस्पतिवार) को सुबह नौ बजे से शाम पांच बजे तक हाईकोर्ट के क्रिकेट मैदान में ही संपन्न होगा। बैठक में अधिवक्ता हर्ष गोपाल की सदस्यता बहाल करने का भी निर्णय लिया गया। कार्यकारिणी के विरुद्ध अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने के कारण उनकी सदस्यता समाप्त कर दी गई थी। बैठक में संयुक्त सचिव प्रेस आरडी पांडेय, अमित कुमार सिंह सोनू, राजकुमार त्रिपाठी, दिनेश वरुण, बैरिस्टर सिंह, शशि कुमार द्विवेदी, अंजनी कुमार मिश्र आदि मौजूद रहे।

किरायेदार और मकान मालिक बीच लंबित मुकदमे में तीसरे पक्षकार की दखल जरूरी नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि किरायेदार और मकान मालिक के बीच लंबित बेदखली के मुकदमे में किसी तीसरे पक्षकार की दखल जरूरी नहीं है। भले ही तीसरा पक्षकार संबंधित मकान पर खुद मालिकाना हक का दावा करता हो।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि किरायेदार और मकान मालिक के बीच लंबित बेदखली के मुकदमे में किसी तीसरे पक्षकार की दखल जरूरी नहीं है। भले ही तीसरा पक्षकार संबंधित मकान पर खुद मालिकाना हक का दावा करता हो। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति डॉ. योगेंद्र कुमार श्रीवास्तव की एकल पीठ ने अलीगढ़ से जुड़े मामले में तीसरे व्यक्ति को मुकदमे में पक्षकार बनाए जाने की मांग खारिज कर दी। मामला दुकान की बेदखली और किराये की बकाया राशि से संबंधित था। वादी ने पांच सितंबर 2017 की बिक्री विलेख के आधार पर दुकान पर अपना मालिकाना हक बताते हुए किरायेदार से दुकान खाली कराने की मांग की थी। वहीं, याची ने खुद को मुकदमे में पक्षकार बनाए जाने की मांग करते हुए दावा किया कि उसके पास 19 जून 2017 का बिक्री विलेख है।

आरोप था कि बाद की बिक्री विलेख उसके साथ धोखाधड़ी करके हासिल की गई। इस बिक्री विलेख को निरस्त कराने के लिए उसने वर्ष 2018 में अलग से मूल वाद भी दाखिल कर रखा है, जो अभी लंबित है। याची की ओर से दलील दी गई कि किरायेदार ने अपने लिखित बयान में उसे मकान मालकिन बताया है। ऐसे में बेदखली के मुकदमे में होने वाला कोई भी निष्कर्ष उसके अधिकारों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए उसे मुकदमे का पक्षकार बनाया जाना जरूरी है। हालांकि, कोर्ट ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। कोर्ट ने कहा कि याची के मालिकाना हक के दावे का फैसला करने के लिए दोनों बिक्री विलेखों की वैधता, उनके निष्पादन और कानूनी प्रभाव के अलावा धोखाधड़ी व गलत बयानी के आरोपों की भी जांच करनी होगी। ये सभी प्रश्न पहले से लंबित दीवानी मुकदमे में तय किए जाने हैं।

कोर्ट ने कहा कि सिविल प्रक्रिया संहिता के तहत पक्षकार बनाने की प्रक्रिया का इस्तेमाल इस उद्देश्य से नहीं किया जा सकता कि किसी अलग मालिकाना विवाद को लघुवाद न्यायालय के सामने लाकर वहां उसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से फैसला कराया जाए। कोर्ट ने कहा कि पक्षकार बनाए जाने का प्रश्न इस बात पर निर्भर करता है कि मुकदमे में वास्तविक विवाद के प्रभावी और पूर्ण निपटारे के लिए उस व्यक्ति की मौजूदगी आवश्यक है या नहीं। केवल संपत्ति में स्वतंत्र अधिकार का दावा करना किसी व्यक्ति को अपने आप जरूरी पक्षकार नहीं बना देता।

हाईकोर्ट सख्त : हिरासत में आरोपी को मारना-पीटना पुलिस की ड्यूटी का हिस्सा नहीं, पुलिसकर्मियों की याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हिरासत में आरोपी को बांधकर पीटने के मामले में सख्त टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा कि किसी आरोपी को हिरासत में पीटना पुलिस के आधिकारिक कर्तव्य का हिस्सा नहीं है और ऐसे गंभीर अपराध को ड्यूटी के नाम पर सही नहीं ठहराया जा सकता।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि किसी आरोपी को हिरासत में पीटना पुलिस के आधिकारिक कर्तव्य का हिस्सा नहीं है। यह गंभीर अपराध है, जिसे ड्यूटी के नाम पर माफ नहीं किया जा सकता। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह की एकल पीठ ने बांदा में तैनात रहीं शिवानी जोशी समेत दो अन्य पुलिसकर्मियों की उन्मोचन प्रार्थना पत्र (डिस्चार्ज एप्लीकेशन) खारिज करने के ट्रायल कोर्ट के आदेश को बरकरार रखा है। मामला बांदा के बबेरू थाना क्षेत्र का है।

आरोप है कि मई 2022 में एक मुकदमे की जांच के दौरान नोटिस लेकर घर पहुंचे पुलिसकर्मियों के साथ आरोपी पक्ष ने मारपीट की। साथ ही उनके सरकारी कागजात और नोटिस फाड़ दिए गए। इसके बाद पुलिस ने गांव के चार लोगों को हिरासत में ले लिया। इनमें महिलाएं भी शामिल थीं। हिरासत में लिए गए लोगों के परिजनों की ओर से पुलिस पर हिरासत के दौरान हिंसा, छेड़छाड़ और लूटपाट के आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया गया।

आरोप लगाया गया कि पुलिस ने शिकायतकर्ता और उनके परिवार के सदस्यों के हाथ–पैर बांधकर पिटाई की। इससे उनके कूल्हे, जांघ, छाती और शरीर के अन्य हिस्सों में चोट व सूजन आई। इसकी पुष्टि मेडिकल रिपोर्ट में भी हुई। इसके बाद पुलिसकर्मियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया गया। आरोप तय होने से पहले पुलिसकर्मियों ने ट्रायल कोर्ट में उन्मोचन प्रार्थना पत्र दाखिल किया।

कोर्ट ने कहा– पुलिसकर्मियों ने पार की अपनी सीमा

पुलिसकर्मियों की ओर से दलील दी गई कि घटना पुलिस के कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान हुई थी। इसलिए उनके खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए सीआरपीसी की धारा 197 के तहत सक्षम प्राधिकारी से मंजूरी लेना जरूरी है। ट्रायल कोर्ट ने इन तर्कों को मानने से इनकार कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया।

हाईकोर्ट ने कहा कि हिरासत में किसी व्यक्ति को बांधकर बार–बार पीटना आधिकारिक कर्तव्य का हिस्सा नहीं हो सकता। इसे यह कहकर भी सही नहीं ठहराया जा सकता कि जांच के दौरान पुलिसकर्मियों ने केवल अपनी सीमा थोड़ी पार कर दी थी।

रिकॉर्ड के अनुसार, आरोपी पुलिसकर्मियों ने पहले भी संज्ञान और समन आदेश को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट का रुख किया था। हालांकि, आठ फरवरी 2024 को सक्षम अदालत के समक्ष पेश होने और जमानत अर्जी दाखिल करने की अनुमति लेकर उन्होंने वह याचिका वापस ले ली थी।

फिल्म अभिनेता चंद्रचूड़ की एफआईआर पर हाईकोर्ट का बड़ा आदेश, चचेरे भाई-चाची की गिरफ्तारी पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बॉलीवुड अभिनेता चंद्रचूड़ और उनके भाई अभिमन्यु की ओर से दर्ज एफआईआर के मामले में चचेरे भाई जय सिंह और चाची गायत्री देवी की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। दोनों ने अलीगढ़ में दर्ज एफआईआर को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बॉलीवुड अभिनेता चंद्रचूड़ और उनके भाई अभिमन्यु की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर के मामले में उनके चचेरे भाई जय सिंह और चाची गायत्री देवी की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने मामले में राज्य सरकार और वादी पक्ष से जवाब भी मांगा है। यह आदेश न्यायमूर्ति सीडी सिंह और न्यायमूर्ति तरुण सक्सेना की खंडपीठ ने जय सिंह और गायत्री देवी की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया।

याचिका में अलीगढ़ में दर्ज एफआईआर को चुनौती दी गई थी। चंद्रचूड़ की ओर से आरोप लगाया गया है कि उनके दादा की फर्जी वसीयत तैयार कर चचेरे भाई जय सिंह, चाची गायत्री देवी और अन्य लोगों ने पारिवारिक संपत्ति पर कब्जा कर लिया। इस आरोप के आधार पर अलीगढ़ पुलिस ने एफआईआर दर्ज की थी।

एफआईआर के बाद जय सिंह और गायत्री देवी ने गिरफ्तारी से राहत की मांग करते हुए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। याचियों की ओर से बताया गया कि दोनों स्वीडन के नागरिक हैं। हाईकोर्ट ने प्रथम दृष्टया मामले को देखते हुए उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगाते हुए राज्य सरकार और वादी पक्ष को अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है।

फिल्म अभिनेता चंद्रचूड़ सिंह और उनके परिवार का संपत्ति विवाद हवेली जलालपुर एस्टेट से जुड़ा हुआ है। अभिनेता और उनके भाई अभिमन्यु सिंह का आरोप है कि उनकी चाची और अन्य रिश्तेदारों ने मिलकर उनकी करोड़ों रुपये की पुश्तैनी कृषि भूमि और ऐतिहासिक हवेली को हड़पने और अवैध रूप से बेचने की कोशिश की है। उनके दादा के नाम की एक फर्जी और अपंजीकृत वसीयत तैयार की गई। अभिनेता और उनकी मां इससे पहले डीएम और एसएसपी से मिलकर न्याय की गुहार लगा चुके हैं।

अभिनेता ने कहा– वसीयत बनाने की हालत में नहीं थे दादाजी

फिल्म अभिनेता चंद्रचूड़ सिंह ने मीडिया से बातचीत में बताया कि उनकी पुश्तैनी कृषि भूमि को अवैध तरीके से बेचा गया है। यह हमारी पुश्तैनी जमीन है, जिसने 30 साल तक हमारा पालन–पोषण किया। हमारे दादाजी हरेंद्र पाल सिंह अलीगढ़ में गंभीर रूप से बीमार थे और वह वसीयत बनाने की बिल्कुल भी हालत में नहीं थे। हमारी बुआ इस बात की मुख्य गवाह हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि दादाजी के निधन के बाद उनके चाचा और चाची ने मिलकर एक फर्जी और अवैध वसीयत तैयार की। इसी फर्जीवाड़े के आधार पर इस बहुमूल्य संपत्ति को हड़पने और बेचने का प्रयास किया गया है। अभिनेता ने स्पष्ट किया कि फिलहाल सात लोगों के नाम दिए गए हैं, लेकिन जांच आगे बढ़ने पर इसमें और भी कई नाम सामने आएंगे। इन लोगों पर जमीन बेचने, साजिश रचने और फर्जी दस्तावेजों के इस्तेमाल के गंभीर आरोप हैं।

नवरात्र में नगर निगम देगा 550 बेड के मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल की सौगात, 100 करोड़ आएगी लागत

प्रयागराज। शारदीय नवरात्र में नगर निगम जनता को 550 बेड के सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल की सौगात देगा। वर्ष 2025 में सदन में पारित हुए प्रस्ताव की मूलभूत संरचना पर कार्य शुरू हो गया है।

शारदीय नवरात्र में नगर निगम जनता को 550 बेड के सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल की सौगात देगा। वर्ष 2025 में सदन में पारित हुए प्रस्ताव की मूलभूत संरचना पर कार्य शुरू हो गया है। यह अस्पताल नैनी के जहांगीराबाद वार्ड–31 में नगर निगम की तीन एकड़ भूमि पर बनेगा। पार्क मेडी बर्ड लिमिटेड करीब ढाई वर्ष में 100 करोड़ रुपये की लागत से अस्पताल का निर्माण करेगा।

अस्पताल में कैंसर, हृदय, न्यूरोलॉजी, यूरोलॉजी, ऑन्कोलॉजी, मधुमेह, प्लास्टिक सर्जरी व नेफ्रोलॉजी सहित 10 सुपर स्पेशियलिटी ओपीडी चलेंगी। मरीजों को रक्त और रेडियोलॉजी से संबंधित सभी प्रकार की जांचें उपलब्ध होंगी। अस्पताल शुरू होने से प्रयागराज ही नहीं बल्कि चित्रकूट, बांदा, कर्वी, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, जौनपुर, सुल्तानपुर, मछलीशहर, फतेहपुर सहित मध्य प्रदेश के रीवा जिले के मरीजों को भी बेहतर स्वास्थ्य लाभ मिलेगा।

वहीं, अस्पताल शुरू होने के बाद कंपनी निगम को हर साल 18 करोड़ रुपये किराया देगी। यह अनुबंध करीब 30 के लिए रहेगा। इस दौरान सालाना दो से तीन फीसदी रेंट में बढ़ोतरी भी होगी। इसके अलावा नगर निगम के स्वच्छता कर्मियों के लिए 50 बेड और आयुष्मान लाभार्थियों के लिए 25 बेड आरक्षित रहेंगे।

पार्षदों के लिए 10 बेड आरक्षित

सदन के दौरान पार्षदों के लिए अस्पताल में 10 बेड आरक्षित करने और 25 फीसदी स्वास्थ्य लाभ का मुद्दा उठाया गया। पार्षद बब्लू मिश्रा, राजीव शुक्ला, भोला तिवारी, कमलेश तिवारी सहित अन्य पार्षदों ने कहा कि पार्षदों को भी चिकित्सकों का लाभ मिलना चाहिए। इस पर महापौर और नगर आयुक्त ने सहमति जताई। वहीं, नगर आयुक्त ने संस्था के साथ होने वाली अगली बैठक में इस प्रस्ताव को शामिल करने का आश्वासन दिया। वहीं, पार्षद आनंद घिल्डियाल ने ईएसआई लाभार्थियों को भी स्वास्थ्य लाभ देने का प्रस्ताव रखा। इसे सदन की तरफ से स्वीकार किया गया।

शिलान्यास में मुख्यमंत्री योगी हो सकते हैं शामिल

अस्पताल के शिलान्यास में सीएम योगी के आने की संभावना है। महापौर ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को शिलान्यास में मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया।

पार्क मेडी बर्ड लिमिटेड देश का जाना–माना समूह है। गुरुग्राम, गाजियाबाद और नोएडा सहित अन्य शहरों में समूह के कई अस्पताल हैं। अस्पताल के निर्माण से प्रयागराज सहित आसपास के अन्य जिलों को भी उच्च गुणवत्ता का उपचार उपलब्ध हो सकेगा। – गणेश केसरवानी, महापौर

इलाहाबाद हाईकोर्ट: नाबालिग के विवाह का पंजीकरण नहीं कर सकते अधिकारी, उम्र सत्यापन जरूरी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने नाबालिगों के विवाह के पंजीकरण को गंभीरता से लेते हुए उत्तर प्रदेश के सभी विवाह पंजीकरण अधिकारियों को निर्देश दिया है कि विवाह की तारीख पर वर या वधू में से कोई बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 की धारा 2(ए) के तहत 'बालक' है तो विवाह का पंजीकरण नहीं किया जाए। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने नाबालिग के विवाह का पंजीकरण करने के मामले में सख्त रुख अपनाते हुए कहा है कि विवाह पंजीकरण अधिकारी उम्र से संबंधित दस्तावेजों का विश्वसनीय आधार पर सत्यापन किए बिना पंजीकरण नहीं कर सकते। कोर्ट ने कहा कि विवाह के समय यदि वर या वधू में से कोई बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 की धारा 2(ए) के तहत 'बालक' है तो ऐसे विवाह का पंजीकरण नहीं किया जाना चाहिए।

न्यायमूर्ति तेज प्रताप तिवारी ने यह आदेश मथुरा जिले के दीपक पाल की अपील पर दिया। अपीलकर्ता दीपक पाल के खिलाफ थाना हाईवे में अपहरण, दुष्कर्म और अन्य मामलों में विचारण न्यायालय ने सजा सुनाई थी। इसी आदेश को अपील के माध्यम से हाईकोर्ट में चुनौती दी गई। अपीलकर्ता की ओर से दलील दी गई कि कथित घटना के समय पीड़िता करीब 19 वर्ष की थी। उसके साथ दीपक पाल का स्वेच्छा से विवाह हुआ था और विवाह का विधिवत पंजीकरण भी कराया गया था।

राज्य सरकार ने इसका विरोध करते हुए कहा कि विचारण न्यायालय ने साक्ष्यों के आधार पर पीड़िता को नाबालिग पाया था। आरोप लगाया गया कि विवाह का पंजीकरण उसकी कम उम्र का तथ्य छिपाकर कराया गया। हाईकोर्ट ने संबंधित विवाह पंजीकरण अधिकारी को तलब किया। कोर्ट ने पंजीकरण की परिस्थितियों के संबंध में संतोषजनक व्याख्या नहीं मिलने पर कहा कि उम्र सत्यापन किए जाने का कोई प्रमाण रिकॉर्ड पर नहीं है। अदालत ने कहा कि विवाह पंजीकरण अधिकारी की जिम्मेदारी केवल दस्तावेज दर्ज करने तक सीमित नहीं है। उसे उम्र से संबंधित दस्तावेजों का विश्वसनीय सत्यापन करना भी आवश्यक है। हाईकोर्ट ने इस मामले में पंजीकरण अधिकारी की निगरानी, सत्यापन और जवाबदेही में गंभीर विफलता मानी। कोर्ट की टिप्पणी बाल विवाह के मामलों में विवाह पंजीकरण अधिकारियों की जिम्मेदारी को स्पष्ट करने वाली महत्वपूर्ण व्यवस्था मानी जा रही है।

यात्रीगण ध्यान दें : प्रयागराज और सूबेदारगंज से चलने वाली स्पेशल ट्रेनों के बढ़े फेरे

प्रयागराज। दिवाली के पहले ट्रेनों में नो रूम और लंबी प्रतीक्षा सूची का मुद्दा उठाए जाने के बाद रेलवे प्रशासन ने प्रयागराज और सूबेदारगंज स्टेशनों से संचालित स्पेशल ट्रेनों के फेरे बढ़ाने का निर्णय लिया है। दिवाली के पहले ट्रेनों में नो रूम और लंबी प्रतीक्षा सूची का मुद्दा उठाए जाने के बाद रेलवे प्रशासन ने प्रयागराज और सूबेदारगंज स्टेशनों से संचालित स्पेशल ट्रेनों के फेरे बढ़ाने का निर्णय लिया है। इनसे यात्रियों को कंफर्म टिकट की टेंशन कुछ हद तक कम हो सकती है। शेड्यूल के अनुसार, प्रयागराज और सूबेदारगंज से उधना, साबरमती, वलसाड, दादर, इंदौर और वेरावल के लिए कुल सात जोड़ी विशेष ट्रेनों के फेरे बढ़ाए जाएंगे। इनमें प्रयागराज जंक्शन से उधना के लिए द्वि–साप्ताहिक विशेष ट्रेन (04105/04106) को एक अक्तूबर से 30 नवंबर तक बढ़ाया गया है। ट्रेन हर बृहस्पतिवार और रविवार को रवाना होगी। इसी प्रकार प्रयागराज से साबरमती के लिए गाड़ी संख्या 04179/04180 (गाड़ी संख्या 04111/04112 के स्थान पर) तीन अक्तूबर से 29 नवंबर तक हर शनिवार और मंगलवार को चलेगी। प्रयागराज से दादर के लिए साप्ताहिक विशेष ट्रेन (04139/04140) दो अक्तूबर से 29 नवंबर तक हर शुक्रवार को और प्रयागराज से वेरावल के लिए गाड़ी (04173/04174) एक अक्तूबर से 27 नवंबर तक हर बृहस्पतिवार को दौड़ेगी। दूसरी ओर सूबेदारगंज से वलसाड के लिए साप्ताहिक विशेष ट्रेन (04119/04120) तीन अक्तूबर से 29 नवंबर तक हर शनिवार को चलाई जाएगी, जबकि इसी रूट की एक अन्य गाड़ी (04177/04178) का संचालन छह अक्तूबर से 25 नवंबर के बीच हर मंगलवार को होगा। सूबेदारगंज से उधना के बीच द्वि–साप्ताहिक विशेष गाड़ी (04155/04156) 19 अक्तूबर से 27 नवंबर तक हर सोमवार और बृहस्पतिवार को उपलब्ध रहेगी। इसके अलावा सूबेदारगंज से दादर के लिए गाड़ी (04175/04176) साप्ताहिक विशेष गाड़ी चार अक्तूबर से 24 नवंबर के बीच प्रत्येक रविवार को तथा सूबेदारगंज से इंदौर के लिए गाड़ी (04169/04170) द्वि–साप्ताहिक विशेष गाड़ी दो अक्तूबर से 28 नवंबर तक प्रत्येक शुक्रवार और सोमवार को यात्रियों की सेवा के लिए पटरी पर उतरेगी।

वन विभाग की टीम पर हमले के मामले में पांच आरोपी गिरफ्तार

प्रयागराज। शंकरगढ़ क्षेत्र के भैसहाई वन क्षेत्र में अवैध बालू खनन रोकने गई वन विभाग की टीम पर हमले के मामले में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। 14 नामजद समेत अन्य लोगों के खिलाफ तहरीर दी गई थी। शंकरगढ़ क्षेत्र के भैसहाई वन क्षेत्र में अवैध बालू खनन रोकने गई वन विभाग की टीम पर हमले के मामले में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। 14 नामजद समेत अन्य लोगों के खिलाफ तहरीर दी गई थी। वन दरोगा आकाश कुमार की तहरीर के अनुसार, बुधवार को वन विभाग की टीम लखनौटी बीट में गश्त कर रही थी। उन्होंने एक ट्रैक्टर–ट्रॉली में बालू लादकर ले जाते हुए देखा। टीम ने ट्रैक्टर रोकने का प्रयास किया तो चालक दीनानाथ भारतीया भागने लगा। पीछा करने पर ट्रैक्टर अशोक अग्रवाल के वाशिंग प्लांट के पास बालू में फंस गया। वनकर्मी ट्रैक्टर को शंकरगढ़ रेंज कार्यालय ला रहे थे। तभी ट्रैक्टर मालिक कुलदीप भारतीया अपने साथियों के साथ मौके पर पहुंच गया। हमलावरों ने टीम के साथ गालीगलौज की और ईंट–पत्थर से हमला कर दिया। क्षेत्रीय वन अधिकारी अजय कुमार ने बताया कि पथराव में वन विभाग की सरकारी बोलेरो का शीशा टूट गया। हमलावरों ने वाहन की चाबी फेंककर वनकर्मियों को जान से मारने की धमकी दी। वे बालू लदे ट्रैक्टर–ट्रॉली को जबरन छुड़ाकर ले गए, जो बाद में बिना बालू के बरामद हुई। शंकरगढ़ थानाध्यक्ष प्रीतम तिवारी ने बताया कि 14 नामजद व अन्य अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है।

भयहरणनाथ धाम में 14 सितंबर को लगेगा हरि तालिका तीज मेला

विशाल सामाजिक भंडारा आज

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरण नाथ धाम में परम्परागत सामाजिक भंडारा का आयोजन रविवार 13 सितंबर को होगा वहीं 14 सितंबर को गत वर्षों की भाँति हरि तालिका तीज मेला का भव्य आयोजन होगा जिसमें देर रात्रि तक क्षेत्रीय समाज की हजारों निर्जला व्रती महिला शक्ति प्रतिभाग करके भगवान भयहरण नाथ महादेव का पूजन अर्चन करेंगी। यह जानकारी देते हुए

भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान के महासचिव समाज शेखर ने बताया कि गत 26 वर्षों से स्थानीय समाज की सामूहिक भागीदारी से यह भंडारा प्रबुद्ध समाज व बुजुर्गों द्वारा आयोजित होता रहा है। मुख्य मंदिर के पुजारी भोला नाथ तिवारी के संयोजन में कार्यकर्ताओं की टीम शुक्रवार से ही व्यवस्था में लगी है। महासचिव समाज शेखर ने बताया कि 14 सितंबर को अपराह्न 2 बजे से तीज मेला के अवसर पर वन विभाग व लोक भारती के द्वारा पौध संरक्षण के संकल्प के साथ व्रती महिलाओं को फलदार व उन्नत किस्म के पौध वितरित होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधायक जीत लाल पटेल करेंगे। मुख्य अतिथि डीएफओ प्रतापगढ़ आशुतोष गुप्त व विशिष्ट अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार मुन्ना यादव होंगे। पौध वितरण कार्यक्रम का संयोजन लोक भारती के जिला संयोजक डी के शर्मा, सह संयोजक राघवेंद्र सिंह व सागर मिश्र करेंगे। धाम के अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल व कोषाध्यक्ष लाल जी सिंह तथा कार्यालय प्रभारी नीरज मिश्र ने सभी सदस्यों व पदाधिकारियों व प्रबुद्ध समाज से सक्रिय भागीदारी की अपील की है।

डबल इंजन सरकार के खजाने में कमी नहीं, केशव मौर्य बोले, डिजिटल युग में कर्मचारी अहम

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि डिजिटल युग में सरकारी कामकाज में तेजी और जवाबदेही जरूरी है। डबल इंजन सरकार की योजनाओं को आम लोगों तक पहुंचाने में सरकारी कर्मचारियों की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि अब "सुस्ती नहीं, चुस्ती से काम चलेगा।" उपमुख्यमंत्री शनिवार को अटल बिहारी वाजपेयी साइंटिफिक कन्वेंशन सेंटर में आयोजित उत्तर प्रदेश मिनिस्ट्रियल कलेक्ट्रेट कर्मचारी संघ के 60वें अधिवेशन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार के पास खजाने में कोई कमी नहीं है, भ्रष्टाचार खत्म हो गया है केशव मौर्य ने कहा कि सरकार का विशेष जोर महिला सशक्तिकरण और गरीबों तक सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ पहुंचाने पर है। उन्होंने कर्मचारियों से अपील की कि वे योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दौर डिजिटल है। कोई भी सूचना कुछ ही समय में बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच जाती है। उन्होंने कहा कि सरकारी व्यवस्था में भी इसी तेजी के साथ काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आज उनके संबोधन की बात भी रिकॉर्ड होकर तुरंत लोगों तक पहुंच सकती है। ऐसे में कर्मचारियों को अपनी जिम्मेदारियों के प्रति और अधिक सजग रहना होगा। केशव मौर्य ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने सरकारी योजनाओं के पैसे को लेकर टिप्पणी की थी कि केंद्र से भेजे गए 100 रुपये में से नीचे तक केवल एक रुपया पहुंचता है। उन्होंने दावा किया कि अब भाजपा सरकार में योजनाओं की ध नराशि सीधे लाभार्थियों के खातों में पहुंच रही है। उपमुख्यमंत्री ने प्रदेश में बिजली व्यवस्था में सुधार का जिक्र करते हुए कहा, "पहले बिजली आती नहीं थी, अब जाती नहीं।"

विशेष रेलगाड़ी के अतिरिक्त फेरों का संचालन

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान रखते हुए विशेष रेलगाड़ी के समय में संशोधन के साथ अतिरिक्त फेरों के संचालन का निर्णय लिया गया है। निम्नलिखित रेलगाड़ी अपने पूर्व निर्धारित समय, दिन, संरचना, ठहराव एवं मार्ग पर चलेगी, जिसका विवरण निम्नवत् है:-

गाड़ी संख्या 04185/04186 वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी-आसनसोल (सप्ताह में 2 दिन) विशेष रेलगाड़ी

गाड़ी सं. 04185 वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी-आसनसोल			गाड़ी सं. 04186 आसनसोल-वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
(बुध, रवि)	09:20	वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी	19:10	(शुक्र, मंगल)
11:35	11:40	झाझा	20:50	20:55
12:35	12:37	जसीडीह	18:40	18:42
13:02	13:04	मधुपुर जं.	18:13	18:15
13:43	13:45	चित्तरंजन	17:34	17:36
14:45	------	आसनसोल जं.	------	17:10

* पूर्व अधिसूचित सूचना के क्रम में उक्त विशेष गाड़ी का क्रमशः उरई, पुखरायां, गोविंदपुरी, फतेहपुर, प्रयागराज जंक्शन, ज्ञानपुर रोड, बनारस, वाराणसी जंक्शन, औड़िहार, गाजीपुर सिटी, बलिया, सुरेमनपुर, छपरा, हाजीपुर, शाहपुर पटोरी, बरौनी जंक्शन एवं किऊल जंक्शन स्टेशनों पर ठहराव रहेगा।

● गाड़ी संख्या 04185: वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी से प्रत्येक रविवार एवं बुधवार दिनांक 07.10.2026 से 29.11.2026 तक ● गाड़ी संख्या 04186: आसनसोल जंक्शन से प्रत्येक सोमवार एवं गुरुवार दिनांक 08.10.2026 से 30.11.2026 तक

नोट:- ट्रेन की समय सारणी से सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाइन नं. 139 या रेल Rail Madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | @CPRONCR | 2082/26(K)

तीन दिवसीय प्रशिक्षण अभ्यास का समापन

प्रयागराज। सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के विधि विभाग के बी.ए. एलएल.बी. (ऑनर्स) पाठ्यक्रम द्वारा नव प्रवेशित प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय गहन मूटिंग प्रशिक्षण अभ्यास का सफलतापूर्वक समापन 12 सितंबर 2026 को हुआ। यह प्रशिक्षण अभ्यास 10 सितंबर 2026 को प्रारंभ किया गया था। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक जीवन के प्रारंभिक चरण में ही मूटिंग की अवधारणा तथा विधि व्यवसाय के व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे के निर्देशन में किया गया। वे विधि विद्यार्थियों में व्यावसायिक दक्षता, व्यावहारिक विधिक कौशल तथा न्यायालयीन आत्मविश्वास विकसित करने के महत्व पर निरंतर बल देते रहे हैं। बी.ए. एलएल.बी. (ऑनर्स) कार्यक्रम की समन्वयक श्रीमती रेनू सिंह ने संसाधन व्यक्ति सुश्री प्रितिका तिवारी, अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद का स्वागत एवं परिचय कराया। उन्होंने विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सहभागिता करने तथा विधिक शोध, ड्राफ्टिंग,

तर्क–वितर्क एवं न्यायालयीन वकालत से संबंधित आवश्यक कौशल अर्जित करने के लिए इस अवसर का पूर्ण उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान सुश्री प्रितिका तिवारी ने विद्यार्थियों को मूट कोर्ट प्रतियोगिताओं की मूलभूत अवधारणाओं, प्रक्रियाओं एवं महत्त्व से परिचित कराया। प्रशिक्षण सत्रों में मूट कोर्ट की संरचना, मूट प्रोजेक्शन (डवजन च्तवचवेपजपवद) की व्याख्या, विधिक मुद्दों की पहचान, विधिक शोध, तर्कों की तैयारी तथा न्यायालयीन प्रस्तुतिकरण एवं वकालत के मूल सिद्धांतों पर विशेष रूप से चर्चा की गई।

प्रशिक्षण के सभी सत्र अत्यंत संवादात्मक एवं सहभागितापूर्ण रहे। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, अनेक प्रश्न पूछे तथा चर्चाओं में सक्रिय सहभागिता की। विद्यार्थियों को व्यावहारिक समझ प्रदान करने के उद्देश्य से एक मूट प्रोपोजिशन पर भी विस्तार से चर्चा की गई, जिसके माध्यम से उन्होंने तथ्यों का विश्लेषण करने, विधिक मुद्दों को निर्धारित करने तथा दोनों पक्षों के दृष्टिकोण से प्रभावी तर्क विकसित करने की प्रक्रिया को समझा।

इस प्रशिक्षण अभ्यास का सफल समापन नव प्रवेशित विद्यार्थियों के क्षमता–विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा। प्रशिक्षण के दौरान अर्जित कौशल को व्यवहार में लागू करने का अवसर प्रदान करने के लिए प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु निकट भविष्य में विशेष रूप से Beginners* Moot Court Exercise आयोजित करने का भी प्रस्ताव है।

इसके अतिरिक्त, द्वितीय वर्ष से अंतिम वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए उनके मध्यावधि परीक्षाओं के समापन के पश्चात Intensive Mooting Training Exercise के दूसरे संस्करण का आयोजन भी प्रस्तावित है।

14 सितंबर को घर-घर विराजेंगे गणपति बप्पा

गणेश चतुर्थी की तारीख को लेकर दूर हुआ भ्रम, सुबह 11.13 से दोपहर 1.29 बजे तक स्थापना का शुभ मुहूर्त

मथुरा। गणपति बप्पा के स्वागत की तैयारियां शुरू हो गई हैं। घरों से लेकर सार्वजनिक पंडालों तक गणेश उत्सव की तैयारियां जोर पकड़ने लगी हैं। इस बार गणेश चतुर्थी 14 सितंबर 2026, सोमवार को मनाई जाएगी। पर्व की तारीख को लेकर 13 और 14 सितंबर के बीच बने असमंजस को बलभद्र पीठाधीश्वर आचार्य विष्णु जी महाराज ने पंचांग के आधार पर स्पष्ट किया है।

उन्होंने बताया कि भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 14 सितंबर की सुबह से शुरू होकर 15 सितंबर की सुबह तक रहेगी। ऐसे में 14 सितंबर को ही घरों और पंडालों में विधि–विधान से गणपति की स्थापना की जाएगी। गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेश की पूजा–अर्चना को विघ्नों के नाश और सुख–समृद्धि का कारक माना जाता है।

सवा दो घंटे रहेगा स्थापना

का शुभ मुहूर्त

आचार्य विष्णु जी महाराज के अनुसार गणपति स्थापना और पूजा के लिए सुबह 11रू13 बजे से दोपहर 1रू29 बजे तक का समय श्रेष्ठ रहेगा। भक्त अपनी श्रद्धा के अनुसार गणपति की प्रतिमा घर लाकर पूजा–अर्चना करेंगे। स्थापना के बाद डेढ़, तीन, पांच, सात या दस दिन तक गणपति की पूजा करने की परंपरा है।

दूर्वा और मोदक से करें गणपति का पूजन

गणेश पूजन में दूर्वा, लाल फूल, मोदक, फल और मिठाई का विशेष महत्व माना गया है। पूजा से पहले पूजन स्थल की साफ–सफाई कर चौकी स्थापित की जाती है। चौकी पर वस्त्र बिछाकर भगवान गणेश की प्रतिमा विराजमान की जाती है। इसके बाद जल और पंचामृत से स्नान कराकर भगवान को वस्त्र, पुष्प, दूर्वा और अन्य पूजन सामग्री अर्पित की जाती है।

अंत में गणपति को मोदक का भोग लगाकर आरती की जाती है और प्रसाद वितरित किया जाता है। शहर और आसपास के क्षेत्रों में गणेश चतुर्थी को लेकर बाजारों में भी रौनक बढ़ने लगी है।

सेवा और संस्कृति के संगम में चमकीं बृजवासी सिस्टर्स

नारायण सेवा संस्थान ने गौरी व निशा पाठक को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

मथुरा । भजन, संस्कृति और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए बलदेव की बृजवासी सिस्टर्स गौरी पाठक और निशा पाठक को नारायण सेवा संस्थान ने सम्मानित किया। उदयपुर स्थित सेवा महातीर्थ भवन में आयोजित भव्य समारोह में दोनों बहनों को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

नारायण सेवा संस्थान पिछले चार दशकों से दिव्यांग एवं वंचित बच्चों की सेवा के लिए कार्य कर रहा है। समारोह में बृजवासी सिस्टर्स के भजनों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सेवा कार्यों की सराहना की गई। संस्थान के प्रतिनिधियों ने कहा कि भारतीय संस्कृ ति और सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार के साथ मानव सेवा के क्षेत्र में दोनों बहनों का योगदान प्रेरणादायी है।

समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सम्मानित जाह्नवी और अंतरराष्ट्रीय कान्स महोत्सव में श्रीमद्भागवत गीता एवं जपमाला के साथ भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली आरती क्षेत्रपाल की मौजूदगी भी आकर्षण का केंद्र रही।

सम्मान से बलदेव में खुशी की लहर

बृजवासी सिस्टर्स को मिले सम्मान की खबर बलदेव पहुंचते ही शुभचिंतकों और क्षेत्रवासियों ने खुशी जताई। सुजीत वर्मा, डॉ. जगदीश पाठक, मोहित पाठक, सुशेंद्र मित्तल, सोनू भैया, चेयरमैन डॉ. मुरारी लाल अग्रवाल, जवाहर उपाध्याय, माधव तेहरिया, अनुज उपमन्यु, राजेश पाठक, पूर्व चेयरमैन रामकृष्ण वर्मा, संजीव गोयल, राकेश गोयल, शिवा उपाध्याय, सुरेश भारद्वाज, मदन पांडेय, मुकेश उपाध्याय, सुधाकर उपाध्याय, राजेश पांडेय और यतींद्र बल्लभ शास्त्री आदि ने बधाई दी। लोगों ने कहा कि यह सम्मान केवल दोनों बहनों का नहीं, बल्कि बलदेव की सांस्कृतिक पहचान का भी गौरव है।

पुस्तकों से ज्ञान, संस्कार और विचारों को मिलेगा विस्तार

पुस्तकें ज्ञान, संस्कार और विचारों की सबसे सशक्त साथी- योगेंद्र

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ विश्वविद्यालय में गोमती पुस्तक महोत्सव–2026 के पांचवें संस्करण का शुभारंभ किया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के संयुक्त प्रयासों से नौ दिवसीय पुस्तक महोत्सव 12 से 20 सितंबर तक चलेगा। पुस्तक प्रदर्शनी के साथ लेखक संवाद, संगोष्ठी कवि सम्मेलन, व्याख्यान, पुस्तक विमोचन, क्विज, किस्सागोई सहित विभिन्न ज्ञानवर्धक एवं रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहा कि पुस्तकें ज्ञान के संकलित और लिपिबद्ध दस्तावेज हैं। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, क्योंकि उसके भीतर ज्ञान, विवेक और बुद्धि है। इन्हीं के माध्यम से विचारों का निर्माण होता है और विचारों का संकलन जब लिपिबद्ध होता है तो वह पुस्तक का रूप लेता है। उन्होंने कहा कि ऐसी पुस्तकें, जो हमें ज्ञान और संस्कार देने के साथ अपनी भाषा, संस्कृति और परंपरा से परिचित कराती हैं, साहित्य की ओर ले जाती हैं। उन्होंने पंडित रामचंद्र शुक्ल का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य किसी समाज की संचित ज्ञानराशि का कोष होता है। पुस्तकें हमारी मार्गदर्शक, मित्र और सलाहकार हैं। यहां होने वाली संगोष्ठियों, कवि सम्मेलनों, व्याख्यानों और पुस्तक विमोचन जैसे कार्यक्रमों से नए लेखकों को अपनी प्रतिभा और कृतित्व को सामने रखने का अवसर मिलता है।उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में जहां लोगों, विशेषकर नई पीढ़ी का पुस्तकों से जुड़ाव कम हो रहा है, वहीं ऐसे आयोजन बच्चों और युवाओं को पुनः पुस्तकों के करीब लाने का कार्य कर रहे हैं। बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने कहा कि लखनऊ साहित्य, संस्कृति और कला की समृद्ध परंपरा का केंद्र रहा है। ऐसे में नौ दिवसीय यह ज्ञान महाकुंभ नई पीढ़ी को पुस्तक, साहित्य और अपनी संस्कृति से जोड़ने की दिशा में अभिनव प्रयास है। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में विद्या को सभी धनों में श्रेष्ठ माना गया है। डिजिटल तकनीक जरूरी है, पर पुस्तकें विचारों को आकार देने में अनूठी हैं।

मौन का पहन आवरण

(छप्पय)

सबका बन आधार   करे जो सेवा सबकी।
करो न अत्याचार   समझकर उसको हलकी।
पर्वत का भी बोझ   लिए काँधे पर अपने।
सागर को कर प्यार   पूर्ण करती है सपने।
रे मानव! तजकर अहं   पढ़ माटी के रूप को।
हरियाली के ही लिए   सहती है जो धूप को।।

नदियों का संगीत   मौन का पहन आवरण।
धरती से कर बात   मृत्यु का लिखे व्याकरण।
पढ़कर भी इंसान   विकासी घोड़ा चढ़ के।
हरियाली को रौद   मनाता खुशियाँ जम के।
दिल, दौलत की छाँव में   सूरज को कह चंद्रमा।
जीता है वह ख्वाब में   समझ अमा को अर्यमा।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

गिरिराज प्रभु की भक्ति में रंगे सांसद अक्षय यादव

सप्तकोसीय पैदल परिक्रमा कर किया दुग्धाभिषेक

गोवर्धन। धर्मनगरी गोवर्धन में शुक्रवार को समाजवादी पार्टी से फिरोजाबाद सांसद अक्षय यादव पहुंचे। उन्होंने गिरिराज महाराज की भक्ति और आस्था के साथ पूजा–अर्चना कर पैदल परिक्रमा की। सांसद के गोवर्धन पहुंचने से परिक्रमा मार्ग पर धार्मिक माहौल नजर आया। उन्होंने गिरिराज महाराज से देश–प्रदेश में सुख–समृद्धि और जनकल्याण की

कामना की। पैदल परिक्रमा के दौरान अक्षय यादव ने गिरिराज जी के विभिन्न स्वरूपों के दर्शन किए और परिक्रमा मार्ग पर मौजूद श्रद्धालुओं के साथ धार्मिक वातावरण का अनुभव किया। इसके बाद वह प्रसिद्ध दानघाटी मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने गिरिराज प्रभु का दूध से अभिषेक किया। मंदिर में विधि–विधान से पूजा–अर्चना कर गिरिराज महाराज का आशीर्वाद लिया। दानघाटी मंदिर में सांसद अक्षय यादव को सपा के प्रदेश सचिव ठाकुर किशोर सिंह ने स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। इस दौरान दानघाटी मंदिर परिसर भक्तिमय नजर आया। सांसद अक्षय यादव ने गिरिराज महाराज के दर्शन कर ब्रज की धार्मिक परंपराओं और आस्था के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। उनके साथ ठाकुर किशोर सिंह, जितेंद्र सिंह, अंशु कौशिक, पंकज मुखिया सहित अन्य लोग मौजूद रहे। सांसद के गोवर्धन पहुंचने की जानकारी मिलने पर स्थानीय लोगों और समर्थकों ने भी उनसे मुलाकात की।

उत्तर मध्य रेलवे

ई-प्रापण निविदा सूचना संख्या : 26/43 | दिनांक : 11.09.2026

ई-प्रापण निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उ0म0रे0, प्रयागराज (आई.एस.ओ.9001:2015) प्रमाणित इकाई) निम्नलिखित मदों के लिए ई-प्रापण निविदायें आमंत्रित करते हैं।

निविदा संख्या	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	निविदा खुलने की तिथि
70261817	बोल्ट M.S. कॉक हेड राउंड बॉडी, बिना नट के	82661 Kgs	19.11.2026
60255022A	सिज़र लिफ्ट 450 के जी	5 नग	19.10.2026
80265027	5 (पांच) टन कपिसिटी डीजल हाईड्रोलिक रेल क्रेन.	1 नग	21.10.2026
6326RGC17	[illegible]	1, 45, 48, 762 Number	12.OCT.26

नोट : उपरोक्त सभी ई-प्रापण निविदाओं का पूरा विवरण IREPS वेबसाइट https://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदाओं में किसी भी बदलाव/शुद्धि-पत्र के लिए कृपया इस वेबसाईट को नियमित रूप से देखें। समाचार-पत्र में कोई अलग से शुद्धि-पत्र/परिशोधन प्रकाशित नहीं किया जाएगा। 2079/26 (C)

North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | @CPRONC

उत्तर मध्य रेलवे

ई-टेण्डर नं.: [illegible]-034-2026-27 | दिनांक: 10.09.2026

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से वरि0 मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियन्ता/समन्वय, उत्तर मध्य रेल प्रयागराज द्वारा ई-टेण्डर के द्वारा पर्याप्त वित्तीय क्षमता एवं अनुभव सहित प्रतिष्ठित ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य के लिये खुली निविदा, ई-निविदा में वर्णित खुलने के दिनांक को 12.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है।

निविदा नं.: 034 | अनुमानित मूल्य : ₹ 8853533.28

कार्य का विवरण: प्रयागराज मंडल के तीन (03) स्टेशनों [illegible] पर लगे हुये [illegible] का तीन वर्ष के लिये समग्र वार्षिक अनुरक्षण अनुबन्ध।

बिड सिक्यूरिटी : ₹ 177100.00 | निविदा प्रपत्र का मूल्य : ₹ 0.00

कार्य समापन की अवधि : छत्तीस माह | निविदा खुलने की तिथि : 08.10.2026

निविदा प्रपत्रों की उपलब्धता: निविदा प्रपत्र www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। धरोहर की राशि जमा करना एवं उसका रूप: निविदाओं को उपरोक्त बिड सिक्यूरिटी निविदा प्रपत्र के साथ ऑनलाइन इंटरनेट बैंकिंग या ऑनलाइन भुगतान गेटवे द्वारा की जायेगी। यदि निविदा दाता बिड सिक्यूरिटी उपरोक्त के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में जीसीसी के अनुसार जमा करते हैं तो उनका निविदा स्वीकार किया जायेगा। यदि निविदादाता द्वारा जमा की गयी बिड सिक्यूरिटी बैंक गारंटी के रूप में है तो यह उचित स्टाम्प शुल्क के अनुसार होना चाहिये। बैंक गारंटी जमा करते समय यह उ0प्र0 स्टाम्प अधिनियम 2008 की धारा 13 एवं 24 और समय-समय पर निर्धारित दर के अनुसार होना चाहिये। बिना बिड सिक्यूरिटी वाली निविदायें खारिज कर दी जायेंगी। निविदा खुलने का समय तथा स्थान: निविदा पूर्व निर्धारित तिथि 12.30 बजे या उसके बाद ई-निविदा द्वारा मण्डल रेल प्रबंधक, प्रयागराज के कार्यालय में खोली जायेगी। अगर उस दिन किसी कारणवश कार्यालय बन्द रहे तो निविदा अगले दिन, कार्य दिवस पर खोली जायेगी। निविदा की वैधता: निविदा खुलने के 60 दिन तक। निविदा डीलिंग हेतु रेलवे के अधिकार: रेलवे प्रशासन का, किसी भी समय बिना कारण बताये कोई एक या सारी निविदाओं को स्थगित/संशोधित/निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है। 2083/26 (A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

ई-टेण्डर नं. पी आर वाइ जे-सिग-036-2026-27 | दिनांक: 11.09.2026

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से वरि. मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियन्ता/सम. उत्तर मध्य रेल प्रयागराज द्वारा ई-टेण्डर के द्वारा पर्याप्त वित्तीय क्षमता एवं अनुभव सहित प्रतिष्ठित ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य के लिये खुली निविदा ई-निविदा में वर्णित खुलने के दिनांक को 12:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है:

निविदा नं.: 036, कार्य का विवरण: प्रयागराज मंडल के वरि. मंडल संकेत एवं दूर संचार अभियन्ता/प्रयागराज के पं. दीन दयाल उपाध्याय-कानपुर खण्ड में एक वर्ष की अवधि के लिये ए.एम.टी.सी. माड्यूल के रिपेयर का कार्य।

अनुमानित मूल्य : ₹ 71,59,762.33 | बिड सिक्यूरिटी : ₹ 1,43,200.00

निविदा प्रपत्र का मूल्य : ₹ 0.00 | कार्य समापन की अवधि : बारह माह।

निविदा खुलने की तिथि : 09.10.2026 | निविदा की वैधता : निविदा खुलने के 60 दिन तक।

निविदा प्रपत्रों की उपलब्धता: निविदा प्रपत्र www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।

धरोहर की राशि जमा करना एवं उसका रूप: निविदाओं को उपरोक्त बिड सिक्यूरिटी निविदा प्रपत्र के साथ ऑनलाइन इंटरनेट बैंकिंग या ऑनलाइन भुगतान गेटवे द्वारा की जायेगी। यदि निविदा दाता बिड सिक्यूरिटी उपरोक्त के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में जीसीसी के अनुसार जमा करते हैं तो उनका निविदा स्वीकार किया जायेगा। यदि निविदादाता द्वारा जमा की गयी बिड सिक्यूरिटी बैंक गारंटी के रूप में है तो यह उचित स्टाम्प शुल्क के अनुसार होना चाहिये। बैंक गारंटी जमा करते समय यह उ.प्र. स्टाम्प अधिनियम 2008 की धारा 13 एवं 24 और समय-समय पर निर्धारित दर के अनुसार होना चाहिये। बिना बिड सिक्यूरिटी वाली निविदायें खारिज कर दी जायेंगी।

निविदा खुलने का समय तथा स्थान : निविदा पूर्व निर्धारित तिथि 12:30 बजे या उसके बाद ई-निविदा द्वारा मण्डल रेल प्रबंधक, प्रयागराज के कार्यालय में खोली जायेगी। अगर उस दिन किसी कारणवश कार्यालय बन्द रहे तो निविदा अगले दिन कार्य दिवसपर खोली जायेगी।

निविदा डीलिंग हेतु रेलवे के अधिकार : रेलवे प्रशासन का किसी भी समय बिना कारण बताये कोई एक या सारी निविदाओं को स्थगित/संशोधित/निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है। 2084/26 (MG)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

पनीर का अर्थशास्त्र

एक समय देश में विशिष्ट खाद्य पदार्थ माने जाने वाले पनीर को लेकर आज गहराता अविश्वास चिंता की बात है। मुनाफे के लिये उपभोक्ता के विश्वास से खिलवाड़ का यह धंधा पूरे देश में खूब चल रहा है। दिल्ली में सामने आया नकली पनीर का मामला इसी कड़ी का एक हिस्सा है। निस्संदेह, ये मामले हमारी खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी को ही उजागर करते हैं। ये विडंबना ही है कि किसी उत्पाद की लागत, उसमें प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं और ग्राहक को इस बाबत दी जाने वाली जानकारी में अकसर विरोधाभास पाया जाता है। देश में एनालॉग पनीर की धड़ल्ले से बिक्री के पीछे भी मुनाफे का प्रलोभन ही है। जिसमें वेजिटेबल फैट,स्टार्च, प्लांट प्रोटीन और गैर डेयरी उत्पादों को मिलाया जाता है। दरअसल, यह पनीर, असली दूध वाले पनीर की तुलना में काफी सस्ता होता है और उत्पादकों के मुनाफे को बढ़ाता है। जानकारों का अनुमान है कि कीमतों का यह अंतर चालीस से पचास फीसदी तक हो सकता है। ऐसे में जब रेस्टोरेंट,कैटरर और खाने–पीने के दूसरे कारोबार कम मुनाफे पर करते हैं तो महंगे पनीर के जगह सस्ता पनीर इस्तेमाल करने का लालच होना एक स्वाभाविक बात है। दरअसल, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हर एनालॉग प्रोडक्ट वास्तव में खाने की दृष्टि से असुरक्षित ही होता है। वास्तव में मुख्य समस्या धोखा देने की है। यदि किसी डेयरी पदार्थों से मुक्त विकल्प की पहचान स्पष्ट तौर पर एनालॉग पनीर के तौर पर की जाती है, तो ग्राहक सोच–समझकर उसको खरीदने के बारे में फैसला स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात इसको लेकर ईमानदारी न होना है। जब विक्रेता इसे दूध का पनीर बताकर बेचने लगते हैं तो उपभोक्ता निर्णय नहीं ले पाते। ऐसे में असली पनीर वाली पौष्टिकता उन्हें नहीं मिल पाती। निर्विवाद रूप से इस मामले में रेस्टोरेंट सबसे कमजोर कड़ी के रूप में सामने आते हैं। जिनका मुख्य मकसद अपने मुनाफे को प्राथमिकता देना ही होता है। वास्तव में जब भी कोई रेस्टोरेंट अपने किचन में एनालॉग पनीर आदि का इस्तेमाल करना शुरू करता है और उससे कोई व्यंजन बना लेता है तो ग्राहक नहीं समझ पाता है कि असली पनीर है या नकली पनीर है। देश के खाद्य पदार्थों का नियमन करने वाली संस्था एफएसएसएआई ने फूड–सर्विस देने वाले संस्थानों को स्पष्ट निर्देश दे रखे हैं कि वे यह सुनिश्चित करें कि पनीर वाली डिश में एनालॉग पनीर का इस्तेमाल ग्राहकों को सही जानकारी दिए बिना न किया जाए। इस विवाद के चलते देश के कई राज्यों ने कृत्रिम पनीर के खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। पंजाब सरकार ने इसके बनाने, संग्रहण करने, ट्रांसपोर्ट करने, बांटने और पनीर के नाम पर बेचने पर एक साल के लिये रोक लगा दी है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि एनालॉग पनीर के खिलाफ छापेमारी और उस पर प्रतिबंध लगाने मात्र से यह समस्या हल नहीं होने वाली है। दरअसल, नियामकों को उन आर्थिक कारणों पर भी गंभीरता से ध्यान देना होगा, जिसकी वजह से असली पनीर की जगह नकली पनीर का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है। वास्तव में पनीर की जांच और गुणवत्ता के असली पनीर की उपलब्धता को सुनिश्चित करना जरूरी है। साथ ही तमाम रेस्टोरेंट व होटलों को उन खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के लिये जवाबदेह बनाना होगा, जिन्हें वे खरीदते हैं और ग्राहकों को परोसते हैं। निस्संदेह, हर ग्राहक को इस बात का हक है कि वह जान सके कि वह किस तरह का पनीर खा रहा है। एनालॉग पनीर उत्पादकों को उत्पाद के पैकेट पर स्पष्ट रूप से लिखना अनिवार्य होना चाहिए कि यह एनालॉग पनीर है। इसके अलावा सवाल इसके अर्थशास्त्र का भी है कि यदि उत्पादक इसके जरिये मुनाफा कमा रहे हैं तो उपभोक्ता को उस कीमत के अंतर का लाभ मिलना चाहिए। साथ ही उन विक्रेताओं पर नकेल कसनी होगी जो असली पनीर की कीमत पर एनालॉग पनीर धड़ल्ले से बेच रहे हैं। वहीं दूसरी ओर ग्राहकों की सजगता भी इस समस्या के अंतिम समाधान में मददगार हो सकती है।

हिन्दी दिवस: अपनी ही भाषा के लिए यह एक दिन क्यों?

जयराम जय

जिस देश में बच्चा पहला शब्द हिन्दी या किसी भारतीय भाषा में बोलता है, माँ की लोरी हिन्दी में सुनता है, सुख–दुःख हिन्दी में बाँटता है और जीवन की सबसे गहरी अनुभूतियाँ अपनी भाषा में व्यक्त करता हैकृउसी देश में हिन्दी के लिए एक दिन क्यों?

यह प्रश्न हिन्दी दिवस की सबसे बड़ी विडंबना है।

हर वर्ष हिन्दी दिवस आता है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े मनते हैं, गोष्ठियाँ होती हैं, भाषण दिए जाते हैं, पुरस्कार बाँटे जाते हैं और हिन्दी के गौरव का स्मरण किया जाता है। फिर कुछ दिनों बाद सब अपनी पुरानी राह पर लौट जाते हैं। इसलिए हिन्दी दिवस को केवल उत्सव मानना पर्याप्त नहीं; इसे आत्ममंथन का दिन बनाना होगा।

प्रश्न यह नहीं कि हिन्दी कितनी बड़ी भाषा है। प्रश्न यह है कि इतनी बड़ी सामाजिक शक्ति होने के बावजूद हिन्दी अपने ही देश में ज्ञान, शासन, न्याय और रोजगार के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपेक्षित स्थान क्यों नहीं बना सकी?

समस्या अंग्रेजी नहीं, मानसिकता है

अंग्रेजी सीखना आज की आवश्यकता हो सकता है, लेकिन अंग्रेजी को श्रेष्ठ और हिन्दी को हीन मान लेना मानसिक गुलामी का लक्षण है।

आज अनेक परिवारों में अंग्रेजी माध्यम को बेहतर भविष्य का लगभग पर्याय मान लिया गया है। हिन्दी माध्यम को लेकर अभिभावकों में संकोच है। इससे भी अधिक असहज स्थिति तब बनती है जब हिन्दी के प्रचार–प्रसार से जुड़े लोग स्वयं अपने बच्चों के लिए हिन्दी माध्यम पर भरोसा नहीं करते।

यह प्रश्न कठोर है, लेकिन पूछा जाना चाहिएकृयदि हिन्दी के समर्थक ही हिन्दी में शिक्षा को अपने बच्चों के भविष्य के लिए पर्याप्त नहीं मानते, तो समाज से हिन्दी पर विश्वास करने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

भाषा का सम्मान भाषण से नहीं, उससे जुड़े अवसरों और विश्वास से पैदा होता है।

हिन्दी दिवस नहीं, हिन्दी का काम जरूरी है

हिन्दी पखवाड़े और हिन्दी दिवस तभी सार्थक हैं जब उनका असर कार्यालयों की कार्य–संस्कृति पर दिखाई दे। प्रश्न यह नहीं कि कितनी गोष्ठियाँ हुईं; प्रश्न यह है कि नागरिक के लिए हिन्दी में कितने काम सरल हुए।

सरकारी योजनाएँ, प्रपत्र, सूचनाएँ और प्रशासनिक प्रक्रियाएँ सरल हिन्दी में उपलब्ध हों। न्यायिक प्रक्रिया नागरिक की समझ से दूर न हो। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो।

हिन्दी को मंच से उतारकर काम की मेज तक लाना होगा।

केवल समारोहों से भाषा मजबूत नहीं होती; संस्थागत प्रयोग से होती है।

असली लड़ाई शिक्षा और ज्ञान की है

हिन्दी को प्रतिष्ठा तभी मिलेगी जब उसमें आधुनिक ज्ञान उपलब्ध होगा।

विज्ञान, चिकित्सा, विधि, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और तकनीक की गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें, डिजिटल सामग्री और मौलिक शोध हिन्दी में उपलब्ध कराने होंगे। केवल अनुवाद पर्याप्त नहीं; हिन्दी में ज्ञान–सृजन की परंपरा विकसित करनी होगी।

हिन्दी को कठिन और कृत्रिम शब्दावली में बाँधना भी उसके हित में नहीं। ऐसी हिन्दी चाहिए जो सरल हो, सक्षम हो और आधुनिक ज्ञान को सहजता से व्यक्त कर सके।

यह लड़ाई 'हिन्दी बनाम अंग्रेजी' की नहीं होनी चाहिए।

हमें अंग्रेजी भी चाहिए, भारतीय भाषाएँ भी और विश्व से संवाद की क्षमता भी। भारत की शक्ति उसकी बहुभाषिकता है। हिन्दी का विकास दूसरी भारतीय भाषाओं को पीछे धकेलकर नहीं, उनके साथ आगे बढ़कर होना चाहिए।

शासन और न्याय की भाषा कौन?

लोकतंत्र में नागरिक को केवल अधिकार नहीं, व्यवस्था को समझने का अधिकार भी होना चाहिए।

जब सरकारी कामकाज की भाषा नागरिक की समझ से दूर हो जाती है, तो शासन और समाज के बीच दूरी बढ़ती है। न्यायालयों में भी ऐसी भाषा और प्रक्रिया का विस्तार आवश्यक है जिसे सामान्य नागरिक समझ सके।

प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा में भी भाषा प्रतिभा की बाधा नहीं बननी चाहिए। हिन्दी माध्यम से पढ़ा विद्यार्थी यदि ज्ञान और योग्यता में सक्षम है तो भाषा के कारण उसके अवसर सीमित नहीं होने चाहिए।

प्रतिभा की कोई भाषा नहीं होती; अवसरों की भाषा अवश्य होती है।

हमें उस भाषा–व्यवस्था को बदलना होगा जिसमें अवसरों की सबसे बड़ी चाबी एक ही भाषा के हाथ में दिखाई देती है।

हिन्दी की शक्ति सरकार से बड़ी है

हिन्दी की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिस भाषा को हम सरकारी संरक्षण का मोहताज समझते हैं, वह समाज में अपने बल पर निरंतर आगे बढ़ रही है।

हिन्दी पत्रकारिता, सिनेमा, संगीत, टेलीविजन और अब डिजिटल माध्यमों ने उसकी पहुँच को असाधारण रूप से विस्तृत किया है। भारत से बाहर बसे भारतीय समुदाय भी अपनी भाषाओं और संस्कृति के माध्यम से हिन्दी को विश्व के अनेक हिस्सों तक ले गए हैं।

इसलिए हिन्दी के भविष्य को लेकर निराश होने की जरूरत नहीं।

लेकिन आत्मसंतोष की भी नहीं।

हिन्दी का सामाजिक विस्तार जितना बड़ा है, उसका संस्थागत विस्तार उतना ही मजबूत होना चाहिए। संख्या और प्रभाव महत्वपूर्ण हैं, पर भाषा का वास्तविक सामर्थ्य तब सिद्ध होता है जब वह ज्ञान और निर्णय की भाषा भी बन सके।

इसीलिए हिन्दी को बचाने की बात से आगे बढ़कर उसे सक्षम बनाने की बात करनी होगी।

आँकड़ों से अधिक जरूरी है आत्मविश्वास

हिन्दी बोलने वालों की संख्या को लेकर विभिन्न अध्ययनों में अलग–अलग आँकड़े मिलते हैं। गणना की पद्धतिकृमातृभाषा, दूसरी भाषा या हिन्दी समझने वालों की श्रेणीकृअलग होने से इन आँकड़ों की तुलना सावधानी से करनी चाहिए।

लेकिन हिन्दी के व्यापक सामाजिक प्रभाव के लिए केवल आँकड़ों की जरूरत नहीं।

करोड़ों लोगों का दैनिक व्यवहार, विशाल पत्रकारिता, साहित्य, सिनेमा, संगीत और डिजिटल उपस्थिति स्वयं इसकी शक्ति का प्रमाण हैं।

फिर भी हमें यह स्वीकार करना होगा कि जनसंख्या में बड़ी भाषा होना और संस्थागत शक्ति में बड़ी भाषा होना एक बात नहीं है।

हिन्दी को दूसरी स्थिति हासिल करनी है।

अब नारा नहीं, नीति चाहिए

हिन्दी के लिए भावनात्मक नारों से आगे बढ़ने का समय है।

हिन्दी में आधुनिक ज्ञान का विशाल डिजिटल भंडार बने। उच्च शिक्षा की सामग्री तैयार हो। मौलिक शोध को प्रोत्साहन मिले। तकनीकी शब्दावली सरल और व्यवहारिक हो। प्रशासनिक और न्यायिक कामकाज में हिन्दी का वास्तविक प्रयोग बढ़े। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए अवसरों की समानता सुनिश्चित हो।

और सबसे पहले हमें अपने बच्चों से यह कहना होगाकृ

हिन्दी में पढ़ना भविष्य को छोटा नहीं करता; अवसरों की कमी भविष्य को छोटा करती है।

अंग्रेजी सीखिए, दुनिया से जुड़िए, अनेक भाषाएँ सीखिएकृलेकिन अपनी भाषा बोलने में संकोच मत कीजिए।

किसी समाज की आधुनिकता इस बात से नहीं मापी जाती कि वह कितनी विदेशी भाषा बोलता है; यह भी देखा जाना चाहिए कि वह अपनी भाषा में कितना आधुनिक ज्ञान पैदा कर सकता है।

हिन्दी दिवस का असली अर्थ

हिन्दी को बचाने की जरूरत नहीं है। वह घर में है, बाजार में है, लोक में है, साहित्य में है, सिनेमा में है, पत्रकारिता में है और डिजिटल दुनिया में तेजी से फैल रही है।

जिसे बदलने की जरूरत है, वह हिन्दी नहींकृहिन्दी के प्रति हमारी हीनभावना है।

जिसे मजबूत करने की जरूरत है, वह केवल भाषा नहींकृउसकी शिक्षा, उसकी तकनीकी क्षमता, उसका संस्थागत प्रयोग और उससे जुड़े अवसर हैं।

हिन्दी का सम्मान किसी दूसरी भाषा के विरोध से नहीं होगा। भारत की भाषाई विविधता का सम्मान करते हुए हिन्दी को उसका उचित स्थान देना ही सही रास्ता है।

और शायद हिन्दी दिवस पर हमें सबसे पहले स्वयं से यही प्रश्न करना चाहिएकृ

क्या हम हिन्दी को सचमुच सम्मान देते हैं, या केवल सम्मान देने का आयोजन करते हैं?

जिस दिन हिन्दी में पढ़ने वाला बच्चा अपने भविष्य को लेकर आश्वस्त होगा, हिन्दी में वैज्ञानिक ज्ञान लिखा जाएगा, नागरिक अपनी भाषा में शासन को समझ सकेगा, न्याय की भाषा आम आदमी की समझ में आएगी और हिन्दी बोलने वाला व्यक्ति किसी दूसरी भाषा के सामने स्वयं को छोटा नहीं समझेगाकृउस दिन हिन्दी दिवस का अर्थ बदल जाएगा।

तब हिन्दी को किसी एक दिन की आवश्यकता नहीं होगी।

क्योंकि हिन्दी दिवस कैलेंडर की तारीख नहीं, जीवन की सहज भाषा बन चुका होगा।

और उस दिन शायद हम पूछना छोड़ देंगेकृ

"हिन्दी के लिए एक दिन क्यों?"

क्योंकि उत्तर हमारे जीवन में होगाः

हिन्दी के लिए एक दिन नहीं–हिन्दी के साथ हर दिन।

लेखक परिचय

जयराम जय
जन्मः जन्मतिथि 05 जनवरी 1959, ग्राम पोस्ट सुल्तानगढ़, जिला फतेहपुर उत्तर प्रदेश
शिक्षाः परास्नातक हिन्दी, पत्रकारिता, वास्तुविद् डिप्लोमा।
प्रकाशनः ज़िंदगी गीत है (गीत नवगीत संग्रह),छंद की छांव में (सवैया–घनाक्षरी संग्रह प्रेस में)
संपादन सहयोगरू हमारा शहर मासिक,शेषामृत त्रैमासिक,धरती बचे प्रदूषण से त्रैमासिक पत्रिका।
अभिब्यंजना, एवं पंख तितलियों के साझा संकलन पूर्व कवि प्रकाशन योजना के अन्तर्गतः
देवेन्द्र शास्त्री प्रतिनिधि संकलन व
पं.प्रभात शुक्ल प्रतिनिधि संकलन
पुरस्कार व सम्मानरू देश की प्रमुख साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा।
संप्रतिः उ.प्र.आवास विकास परिषद,से सेवा निवृत्त वास्तुविद अभियंता, वास्तुविदीय कार्य के साथ स्वतंत्र लेखन।
संपर्क–'पर्णिका' बी–11/1
कृष्ण विहार
आवास विकास,कल्याणपुर
कानपुर–208017(उ.प्र.)
मो.नं.9415429104 – 9369848238
ई–esy:jairamjay2011@gmail-com

राही मासूम रज़ा – एक साहित्यिक विरासत

राही मासूम रज़ा को केवल हिंदी के उपन्यासकार, उर्दू के शायर या महाभारत के संवाद लेखक के रूप में देखना उनके व्यापक साहित्यिक व्यक्तित्व को सीमित कर देना होगा। वे मूलतः भारतीयता की उस साझा परंपरा के लेखक थे, जिसमें भाषा, धर्म और संस्कृति की सीमाएँ मनुष्य को बाँटती नहीं, बल्कि जोड़ती हैं। उनकी रचनात्मकता में साहित्य, भाषा और गंगा–जमुनी संस्कृति एक–दूसरे से गहरे जुड़े दिखाई देते हैं।

साहित्य में भारतीय समाज का वास्तविक चेहरा

मासूम रज़ा साहेब का साहित्य किसी आदर्श भारत की तस्वीर नहीं बनाता। उन्होंने गाँव, कस्बे, आम आदमी, सामंती व्यवस्था, जातिगत भेदभाव, सांप्रदायिक तनाव और बदलते सामाजिक मूल्यों को बहुत क़रीब से देखा। उनका प्रसिद्ध उपन्यास श्आधा गाँवश इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। यहाँ एक गाँव के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज के भीतर मौजूद रिश्तों, संघर्षों और सांस्कृतिक साझेदारी को उजागर किया।

उनके लिए साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं था। साहित्य समाज को देखने और मनुष्य को समझने का माध्यम था। भाषा उनके लिए पहचान की दीवार नहीं, पुल थी। राही मासूम रज़ा की भाषा उनकी सबसे बड़ी साहित्यिक पहचान है। उनकी भाषा में हिन्दी, उर्दू , हिंदुस्तानी लोकभाषा व बोलचाल का स्वाभाविक मेल दिखाई देता है।

उन्होंने यह साबित किया कि हिन्दी और उर्दू को दो बिल्कुल अलग सांस्कृतिक खाँचों में रखना भारतीय भाषायी वास्तविकता को समझने में बाधा है। उनकी भाषा में एक ओर श्धर्मश, श्मर्यादाश, श्तातश, श्भ्राताश जैसे शब्द मिलते हैं, तो दूसरी ओर उर्दू–हिंदुस्तानी की सहज रवानी भी दिखाई देती है। इसलिए उनकी भाषा भारत के साझा जीवन की भाषा है।

गंगा–जमुनी संस्कृति के साहित्यिक प्रतिनिधि

मासूम रज़ा के साहित्य में हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियाँ दो अलग–अलग संसारों की तरह नहीं आतीं। वे एक ही सामाजिक जीवन के हिस्से हैं। गाँव की बोली, रिश्ते, त्योहार, लोकविश्वास, खान–पान, स्मृतियाँ और पड़ोस इन सबमें जो सांस्कृतिक साझेदारी है, रज़ा उसे बहुत स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इस अर्थ में उनकी रचनाएँ गंगा–जमुनी तहज़ीब का साहित्यिक दस्तावेज़ भी हैं। उनकी दृष्टि में भारतीय संस्कृति किसी एक समुदाय की निजी संपत्ति नहीं थी। श्महाभारतश इसका सबसे प्रभावशाली उदाहरण है । रज़ा साहेब का महाभारत के लिए संवाद लिखना इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

एक मुस्लिम लेखक द्वारा भारतीय महाकाव्य के पात्रों को ऐसी भाषा देना जिसमें श्तातश, श्भ्राता श्रीश, श्धर्मश, श्अधर्मश, श्मर्यादाश जैसे शब्द सहज रूप से आते हैं। भारतीय संस्कृति की उनकी व्यापक समझ को दर्शाता है। इसे केवल धार्मिक सीमाओं को पार करने की घटना के रूप में देखना भी पर्याप्त नहीं है। असल बात यह है कि राही मासूम रज़ा के लिए महाभारत भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा था और उसमें प्रवेश करने के लिए उन्हें किसी की इजाज़त की ज़रूरत नहीं थी। यही उनकी भारतीयता की सबसे खूबसूरत विशेषता है।

उन्होंने सांप्रदायिकता के विरुद्ध मनुष्य को केंद्र में रखा। श्टोपी शुक्लाश जैसी रचनाओं में रज़ा साहेब ने सांप्रदायिकता को किसी राजनीतिक नारे की तरह नहीं, बल्कि मनुष्य के रिश्तों को प्रभावित करने वाली मानसिकता के रूप में देखा। उनका साहित्य पूछता है कि यदि दो मनुष्य साथ बड़े हुए हैं, साथ हँसे– बोले हैं, साथ दुख झेले हैं, तो केवल धर्म के नाम पर उनके बीच दूरी क्यों हो?

उनकी अपनी पहचान भी एक साहित्यिक वक्तव्य बन जाती हैद्य श्राहीश जी की रचनात्मक यात्रा की एक बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी मुस्लिम पृष्ठभूमि को छिपाया नहीं, लेकिन उसे भारतीय संस्कृति से अलग भी नहीं किया। वो यह स्थापित करते हैं कि भारतीय मुसलमान होना और भारतीय संस्कृति का गहरा हिस्सा होना परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं।

इसी तरह हिंदी में लिखना किसी लेखक को उसकी उर्दू साहित्यिक परंपरा से काटता नही है। यह दृष्टि आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्य से जनसंचार तक उनकी साहित्यिक भाषा संस्कार को विशेष रूप से परिलक्षित करते हैं। उनकी ये ख़ासियत केवल किताबों तक सीमित नहीं रही। फिल्मों और टेलीविज़न के लिए उनके लेखन ने उनकी भाषा और विचारों को बहुत बड़े जनसमूह तक पहुँचाया।

विशेष रूप से महाकाव्य महाभारत के संवादों ने उनकी भाषा को घर–घर तक पहुँचाया। इस तरह वे साहित्य और जनसंस्कृति के बीच सेतु बने।

राही मासूम रज़ा को साहित्य, भाषा और साझी संस्कृति का पोषक इसलिए कहा जा सकता है ,क्योंकि उनके लिए ये तीनों अलग–अलग विषय नहीं थे।

उनका साहित्य कहता है कि भाषा की कोई एक धार्मिक जाति नहीं होती और संस्कृति की कोई एक धार्मिक सीमा नहीं होती।

उनकी लेखनी में गंगा और जमुना केवल नदियाँ नहीं, बल्कि भारत की साझा स्मृति और सांस्कृतिक सह–अस्तित्व की प्रतीक बन जाती हैं। यदि उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को एक पंक्ति में कहना हो तो शायद यह सबसे उपयुक्त होगाकृ

"राही मासूम रज़ा ने हिंदी में उर्दू की संवेदना नहीं मिलाई, बल्कि उस हिंदुस्तानी जीवन को आवाज़ दी, जिसमें हिंदी और उर्दू पहले से साथ–साथ साँस लेती थीं।"

यही उनकी सबसे बड़ी साहित्यिक विरासत है।

–संगीता 'सुमन'

न्यायपालिका की भूमिका, अधिकारों की रक्षा के सवाल

राजेश पाण्डेय

सजीव और सजग लोकतंत्र में न्यायपालिका की भूमिका अहम रहती है। वह लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी स्तंभों के बीच संतुलन बनाए रखती है। संवैधानिक मूल्यों, कानून के शासन, नागरिकों की आजादी, समानता और न्याय की रक्षा करती है। जैसा कि मानव अधिकारों के चौम्पियन जस्टिस वीआर कृष्ण अय्यर ने कहा था, श्न्यायिक समीक्षा अधिकारियों को उनकी सीमाओं के दायरे में रखने के लिए संवैधानिक नियंत्रण के बतौर काम करती हैश। भारत में मनमाने कानूनों, निजी विवादों, सामाजिक अन्याय और शासनतंत्र के दुरुपयोग के खिलाफ अदालतें अक्सर कारगर हथियार साबित होती रही हैं। दूसरी तरफ अलग–अलग अदालतों ने कई फैसलों में सरकारों की मनमानी का समर्थन किया है और संवैधानिक मूल्यों की अनदेखी की है। कई मौकों पर उनकी भूमिका ने निराश किया है। न्याय की उम्मीद लेकर अदालतों के दरवाजों पर दस्तक देने वाले लोगों को खाली हाथ लौटना पड़ा है। फिर भी, न्यायपालिका ने समय–समय पर सरकारी तंत्र पर अंकुश लगाया है, उसकी जवाबदेही तय की है। इस सिलसिले में अभी हाल में संवैधानिक अदालतों के फैसलों ने ध्यान खींचा है। अदालती फैसलों के अलावा सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस उज्जवल भुयन की लगातार आ रही टिप्पणियां भी न्यायपालिका में चल रहे विचार मंथन की झलक पेश करती हैं। उन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अदालतों के कई फैसलों की आलोचना की है। सुप्रीम कोर्ट के किसी जज द्वारा न्यायिक फैसलों की खामियों को सामने रखने के उदाहरण दुर्लभ होते जा रहे हैं। बहरहाल, पहले संवैधानिक अदालतों (सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट) के कुछ निर्णयों पर गौर करें। ये नागरिकों की आजादी, शांतिपूर्ण तरीकों से विरोध जताने के अधिकारों का समर्थन करते हैं। सरकारों के दमन और बुनियादी अधिकारों को कुचलने की कोशिशों को रद्द करते हैं। ये फैसले आगे के लिए नजीर बन सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 1 सितंबर को संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए 20 जुलाई से 25 जुलाई 2026 के बीच आंदोलनकारी छात्रों पर देश भर में दर्ज सभी एफआईआर को रद्द कर दिया। भारत के चीफ जस्टिस की एक टिप्पणी के बाद इंटरनेट मीम्स के बीच कॉकरोच जनता पार्टी का जन्म हुआ। इसके झंडे तले छात्रों ने जंतर–मंतर पर नीट पेपर लीक के लिए शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग के लिए 20 जून से आंदोलन शुरू किया था। 25 जुलाई को प्रधान के इस्तीफे के बाद आंदोलन पर विराम लगा। छात्रों और सरकार के बीच देशभर में आंदोलनों के संबंध में छात्रों पर दर्ज मामले वापस लेने की सहमति बनी थी। सरकार द्वारा वादा न निभाने के विरोध में छात्रों ने 5 सितंबर को संसद कूच का ऐलान किया। आखिरकार केंद्र और कुछ राज्य सरकारों के आग्रह पर 1 सितंबर को चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अगुआई में तीन न्यायाधीशों की बेंच ने सभी एफआईआर रद्द कर दी। 2 सितंबर को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दिल्ली यूनिवर्सिटी की कानून की एक छात्रा आकृति चौधरी की राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) में नोएडा पुलिस द्वारा की गई नजरबंदी को रद्द कर दिया। 13 अप्रैल को नोएडा में न्यूनतम वेतन में बढ़ोतरी की मांग कर रहे कारखाना मजदूरों के आंदोलन से एक दिन पहले आकृति को गिरफ्तार किया गया था। उस पर आगजनी और पथराव के लिए भड़काने का आरोप है। जस्टिस अतुल श्रीधरन और अचल सचदेव की बेंच ने प्रशासन को पांच लाख रुपए हर्जाना देने और किसी अन्य मामले में गिरफ्तारी की जरूरत न होने की स्थिति में आकृति को फौरन रिहा करने का आदेश दिया। आकृति के खिलाफ नोएडा के पांच पुलिस थानों में मजदूर आंदोलन के संबंध में 11 एफआईआर दर्ज हैं। सुप्रीम कोर्ट का एक फैसला बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) के बारे में है। लेकिन यह छात्रों से जुड़ा है। 3 सितंबर को देश की सबसे बड़ी अदालत ने निर्णय दिया कि बार काउंसिल को कानून के छात्रों को अनुशासित करने या उन्हें नियमों के दायरे में रखने का कोई अधिकार नहीं है।

मैं सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली इंसान हूं

रिया चक्रवर्ती

श्दुनिया मुझे श्ट्रेटरश की नजर से देखती है', मुश्किल दौर याद कर छलका रिया चक्रवर्ती का दर्द श्द ट्रेटर्स 2श के एक एपिसोड में रिया चक्रवर्ती ने कहा कि उन्हें देश में सबसे ज्यादा ट्रोल किया गया है. उन्होंने ये भी कहा कि दुनिया मुझे श्ट्रेटरश की नजरों से ही देखती है. बॉलीवुड एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती इन दिनों श्द ट्रेटर्सश के दूसरे सीजन में नजर आ रही हैं. रिया को साल 2020 में काफी बुरे दौर से गुजरना पड़ा था. दरअसल एक्ट्रेस को अपने एक्स–बॉयफ्रेंड सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद काफी कुछ सहना पड़ा था. सुशांत से जुड़े ड्रग्स मामले में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने रिया और उनके भाई शोविक चक्रवर्ती, दोनों को गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेज दिया था. हालांकि कुछ महीने पहले, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन या सीबीआई ने सुशांत की मौत के मामले में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल कर रिया को सभी आरोपों से बरी कर दिया है. वहीं श्द ट्रेटर्सश के एक एपिसोड में रिया ने अपने उस मुश्किल दौर को बात की और कहा कि देश में सबसे ज्यादा ट्रोलिंग उन्ही की हुई है. 'दुनिया मुझे श्ट्रेटरश की नजर से देखती है' बता दे कि शो के पांचवें एपिसोड में, जब श्वेता तिवारी ने रिया से श्ट्रेटरश न होने की वजह बताने को कहा, तो रिया ने खुलकर कहा कि वह श्ट्रेटरश (गद्दार) क्यों नहीं हैं. रिया ने जवाब दिया, ष्मैं श्ट्रेटरश नहीं बनना चाहती. इसकी वजह ये है कि दुनिया पहले से ही मुझे श्ट्रेटरश की नजर से देखती है. क्या आप समझ रहे हैं? यह मेरी जिंदगी के पर्सनल एक्सपीरियंस से उपजी बात है. इसलिए मैं किसी शो में आकर अपनी मर्जी से किसी का श्मर्डरश नहीं करना चाहती. यह मेरे लिए बहुत बुरा होगा. लोग इस पर भद्दे मीम्स बनाएंगे.ष 'सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली इंसान हूं'रिया ने आगे कहा, ष्मैं देश में सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली इंसान हूं. आप सभी जानते हैं कि इसका क्या मतलब है? मैं श्ट्रेटरश नहीं हूं, आप सभी बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं. यह असल श्ट्रेटरश से ध्यान भटकाने की कोशिश है. मेरे बारे में एक बात यह है कि मैं भीड़–चाल नहीं चलती और आसानी से किसी के इंफ्लूएंस में नहीं आती. लेकिन मेरी पर्सनैलिटी ऐसी है कि मैं लोगों को इंफ्लूएंस कर सकती हूं. ष रिया इस एपिसोड मे वोट आउट नहीं हुई. लेकिन पारुल गुलाटी को शो से एविक्ट होना पड़ा. अब जो ट्रेटर्स बचे हैं उनमें कुल्लू, क्रिस्टल डिसूजा, और शाहनील गिल है. शो में क्यों ट्रेटर नहीं बनना चाहती थीं रिया बता दें कि शो में पहले जब होस्ट करण जौहर ने रिया से पूछा था कि क्या वो बचने के लिए इनोसेंट बनना चाहती हैं या ट्रेटर? तो एक्ट्रेस ने साफ कहा था, "मैं इनोसेंट बनना चाहती हूं. इसी साल मुझे क्लीन चिट मिली है, इसी साल लोगों को पता चला है कि मैं निर्दोष हूं. बहुत देर तक शक में रही हूं तो अब मुझे वो इतना पसंद नहीं है. मैंने काफी साल कर लिया है." रिया ने क्या झेला? बता दें कि साल 2020 में अपने एक्स बॉयफ्रेंड सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद रिया को जेल की सजा और सोशल बायकॉट का सामना करना पड़ा था. पिछले साल, सीबीआई की इस मामले में क्लोजर रिपोर्ट से अभिनेत्री को राहत मिली, क्योंकि उन्हें सभी आरोपों से बरी कर दिया गया था. अपने पिछले इंटरव्यू में रिया ने ये भी खुलासा किया था इस पूरे मामले के दौरान उन्होंने काफी मेंटल ट्रॉमा झेला और वे पीटीएसडी (पोस्ट–ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर) से जूझती रही थीं. रियलिटी शो 'द ट्रेटर्स 2' के पांचवें एपिसोड के दौरान जब श्वेता तिवारी ने रिया चक्रवर्ती से पूछा कि वह शो में 'ट्रेटर' क्यों नहीं बनना चाहतीं, तो रिया का दर्द छलक पड़ा. श्वेता के सवाल का जवाब देते हुए रिया ने कहा, 'मैं ट्रेटर नहीं बनना चाहती और इसकी वजह मेरी अपनी जिंदगी का सफर है. दुनिया मुझे पहले ही गद्दार के तौर पर देख चुकी है, क्या आप समझ रही हैं? ऐसे में, मैं किसी शो में आकर अपनी मर्जी से किसी का 'मर्डर' नहीं करना चाहती. यह मेरे लिए बहुत बुरा साबित होगा और लोग इस पर फिर से भद्दे मीम्स बनाने लगेंगे.' अपनी बात पूरी करते हुए रिया ने आगे कहा, 'मैं देश में सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली शख्सियत रही हूं. आप सब जानते हैं कि इसका मतलब क्या है? मैं कोई ट्रेटर नहीं हूं और आप सब बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं. आप लोग जो मुझ पर शक कर रहे हैं, इससे असली ट्रेटर को फायदा मिल रहा है और सबका ध्यान भटक रहा है. मेरे बारे में एक बात साफ है कि मैं भेड़चाल नहीं चलती और न ही मुझे आसानी से बहकाया जा सकता है. बल्कि मेरी शख्सियत ऐसी है कि मैं लोगों को प्रभावित करने का दम रखती हूं.' अच्छी बात यह रही कि इस एपिसोड में रिया चक्रवर्ती बेघर होने से बच गईं, जबकि पारुल गुलाटी को शो से बाहर होना पड़ा. इस समय शो में कुल्लू, क्रिस्टल डिसूजा और शहनील गिल ट्रेटर की भूमिका में बचे हुए हैं. वहीं हरमन सिंघा भी ट्रेटर थे, जिन्हें तीसरे एपिसोड में ही पकड़ लिया गया था. कई सालों तक शक के घेरे में रहीं रिया चक्रवर्ती इससे पहले शो के शुरुआती दिनों में जब होस्ट करण जौहर ने रिया से पूछा था कि गेम में टिके रहने के लिए वह 'इनोसेंट' बनना चाहती हैं।

महज 22 साल की उम्र में इस मॉडल ने दुनिया को कहा अलविदा, 7 बार हो चुकी थी हार्ट सर्जरी

ग्लैमर इंडस्ट्री से एक दुखद खबर सामने आई है। मॉडल और मिस ऑस्ट्रिया 2024 का खिताब जीतने वाली लुसिया सिसिक ने महज 22 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया है। निधन के समय भी उनके सिर पर मिस ऑस्ट्रिया का ताज था। लुसिया के अचानक हुए निधन की खबर से पूरी मॉडलिंग इंडस्ट्री में शोक की लहर दौड़ गई है। मिशन ऑस्ट्रिया ने जर्मन भाषा में एक भावुक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए मिस ऑस्ट्रिया 2024 लुसिया सिसिक के निधन पर गहरा दुःख जताया। संस्था ने कहा कि वे इस दुखद खबर से बेहद सदमे में हैं और लुसिया हमेशा मिस ऑस्ट्रिया परिवार का अभिन्न हिस्सा रहेंगी। उन्होंने लुसिया को याद करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए भी प्रार्थना की। ऑस्ट्रिया मीडिया के अनुसार, वर्ष 2024 में लुसिया के मिस ऑस्ट्रिया बनने के बाद यह प्रतियोगिता दोबारा आयोजित नहीं की है। इसी कारणवश, अपने अंतिम समय तक मिस ऑस्ट्रिया का ताज उन्ही के पास रहा। आपको बता दें कि लुसिया के निधन का आधिकारिक कारण अभी सामने नहीं आया है लेकिन स्थानीय मीडिया की रिपोर्टों में उनकी पुरानी बीमारियों का उल्लेख किया गया है। खबरों के मुताबिक, लुसिया को जन्म से ही दिल के वॉल्व की समस्या थी। इस गंभीर बीमारी के कारन उन्हें जीवन में सात बड़ी हार्ट सर्जरी से गुजरना पड़ा था। साल 2017 में हुई एक जटिल सर्जरी के दौरान लुसिया की हालत इतनी गंभीर जो गई थी कि डॉक्टरों को उन्हें दोबारा होश में लाने के लिए रिससिटेशन करना पड़ा। इस प्रक्रिया के चलते उनके बाएं पैर और पंजे की नसों को नुकसान पहुंचा, जिसके बाद उन्हें फिर से चलना सीखने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ी।

साउथ फिल्म एक्टर और कार रेसर अजित कुमार यूरोप में एक हाई–स्पीड एंड्योरेंस रेस के दौरान हादसे का शिकार हो गए। रेसिंग के दौरान उनकी कार बेकाबू होकर दूसरी गाड़ी से जा टकराई।हालांकि, इस हादसे में उन्हें कोई गंभीर चोट नहीं आई है और वे पूरी तरह सुरक्षित हैं। फिल्मीबीट की रिपोर्ट के मुताबिक, यह हादसा एशियन ला मैंस सीरीज और मिशेलिन ला मैंस कप के रेसिंग इवेंट के दौरान हुआ। अजित कुमार एक्टिंग के साथ कार रेसिंग के काफी शौकीन हैं। अजित कुमार एक्टिंग के साथ कार रेसिंग के काफी शौकीन हैं। रेस के दौरान बेकाबू हुई कार रिपोर्ट्स के अनुसार, रेस के दौरान अचानक उनकी कार से कंट्रोल छूट गया और वह ट्रैक पर मौजूद दूसरी कार से टकरा गई। टक्कर के बावजूद अजित कुमार को चोट नहीं लगी। हादसे के बाद वे सुरक्षित कार से बाहर आ गए। अजित कुमार इंटरनेशनल रेसिंग सर्किट में भाग लेने वाले गिने–चुने भारतीय ड्राइवरों में से एक हैं। 2025 में भी तीन बड़े हादसों में बचे थे अजित अजित कुमार के लिए रेसिंग ट्रैक पर हादसे होना नया नहीं है। इससे पहले साल 2025 में भी वे इटली में जीटी4 यूरोपियन सीरीज के दौरान हादसे का शिकार हुए थे। उसी साल स्पेन के वालेंसिया में पोर्श स्प्रिंट चैलेंज के दौरान उनकी कार दो बार पलटी खा गई थी। इसके अलावा दुबई में 24एच पोर्श प्रैक्टिस रेस के दौरान भी उनकी कार क्रैश हो गई थी। इन सभी हादसों में वे बिना किसी गंभीर चोट के बच निकले थे।कहा था– एक्सीडेंट के बाद सिर्फ रेस खत्म करने का ख्याल आता है कुछ समय पहले द हॉलीवुड रिपोर्टर इंडिया को दिए एक इंटरव्यू में अजित ने हादसों के बाद अपनी सोच पर बात की थी।

विजई बुल्गानिन तेलुगु सिनेमा के एक मशहूर म्यूजिक कंपोजर और सिंगर हैं. उन्हें 2023 की ब्लॉकबस्टर तेलुगु फिल्म बेबी में बेहतरीन संगीत देने के लिए फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला. हालांकि वो इससे पहले भी कई पॉपुलर इंडिपेंडेंट गानों के जरिए अपनी पहचान बना चुके थे. इन्हीं में से एक गाना कोइला था, जो काफी पॉपुलर हुआ. लोगों ने इसे खूब पसंद किया और ये गाना बड़ा हिट हे गया. कोइला गाने ने यूट्यूब पर मचाया तहलका तेलुगु गाना कोइला को अब तक यूट्यूब पर 7.8 करोड़ से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं. ये 23 मई 2025 को रिलीज किया था. इसमें अलेख्या हरिका और विनय शन्मुख नजर आए थे. दोनों की शानदार कैमेस्ट्री और परफॉर्मेंस ने दर्शकों का दिल जीत लिया. सोशल मीडिया पर ये गाना काफी ज्यादा वायरल हुआ. डायरेक्टर्स ने किया था रिजेक्ट दिलचस्प बात ये है कि विजई ने बताया कि शुरुआत में इस गाने को 3–4 फिल्ममेकर्स को उनकी फिल्मों में इस्तेमाल करने के लिए ऑफर किया गया था, लेकिन किसी ने इसे नहीं चुना. इसके बाद विजई और उनकी टीम ने गाने को इंडिपेंडेंट तरीके से रिलीज करने का फैसला किया. विजय बुल्गानिन के बारे में बता दें, विजय बुल्गानिन का जन्म आंध्र प्रदेश के वेदुरुपका में एक तेलुगु परिवार में हुआ था. संगीत और सिनेमा में अपना करियर बनाने के लिए वो साल 2014 के आसपास हैदराबाद आ गए। उन्होंने साल 2015 में आई फिल्म वारिधि से एक म्यूजिशियन के रूप में अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की. उन्होंने सप्तगिरि एक्सप्रेस (2016), रेंडू रेल्लू आरू (2017), और वज्र कवचधरा गोविंदा (2019) जैसी फिल्मों में संगीत दिया. साल 2023 में आई रोमांटिक–ड्रामा फिल्म बेबी ने उनके करियर को पूरी तरह बदल दिया. इस फिल्म के गाने ओ रेंडू प्रेमा मेघालीला काफी सक्सेसफुल रहे और दर्शकों के बीच छा गए।

वक्त के साथ ना फीका होने दें प्यार का रंग, ऐसे संभालें रिश्ते की डोर

❍ खुशनुमा रिश्ते के लिए संतुलन जरूरी है, पर इसे हासिल करना आसान नहीं। समय के साथ बढ़ती जिम्मेदारियों के बोझ तले अमूमन एक व्यक्ति आगे बढ़ जाता है और दूसरा अपने सपनों का बलिदान देकर घर-परिवार की देखभाल में पिछड़ जाता है।

आपने कभी क्या एक पहिये की गाड़ी देखी है? गाड़ी पंचर होने पर क्या वह ज्यादा दूर तक चल सकती है? अब आप सोच रही होंगी कि भला यह कैसा सवाल है। जवाब तो बच्चा भी बता देगा। यकीनन गाड़ी दो पहिये पर चलती है। तो क्या कभी आपने इस ओर सोचा है कि आपकी जिंदगी कितने पहिये पर चल रही है? जी, सही पढ़ा आपने। हमारी जिंदगी भी सड़क पर दौड़ती गाड़ी सरीखी है। जिसकी रफ्तार, चाल और नियंत्रण पति और पत्नी मिलकर बनाते हैं। जब दो लोग एक रिश्ते में बंधते हैं तो यह सिर्फ साथ घूमने–फिरने या सोशल मीडिया पर तस्वीर साझा करने तक सीमित नहीं होता। असली परीक्षा तब शुरू होती है, जब जिंदगी की गाड़ी ऊबड़–खाबड़ सड़कों पर दौड़ना शुरू करती है।

साथ जिएं, साथ बढ़ें भी

आंकड़ों की मानें तो पिछले एक दशक में भारत में तलाक की दर में 30 से 40 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। शहरी इलाकों में 25 से 34 साल के लोगों में सबसे ज्यादा तलाक के मामले देखे जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की तरफ से जारी रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि भारत में तलाक के मामले लगभग दोगुने हो चुके हैं। आपका रिश्ता इस दौर से न गुजरे, इसलिए आपको और आपके साथी को आपसी समझ विकसित करने की जरूरत है।

आपको समझना होगा कि एक जोड़े के तौर पर साथ जीना और साथ बढ़ना ये दोनों अलग–अलग बातें हैं। साथ जीने का मतलब एक ही घर में रहना, शॉपिंग जाना, छुट्टियों पर जाना। लेकिन साथ बढ़ना? इसका मतलब है एक–दूसरे के सपनों को समझना, अपने पार्टनर को आजादी देना, मुश्किल वक्त में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना और हर उस मोड़ पर कसकर एक–दूसरे का हाथ थामना, जब जिंदगी परीक्षा लेने लगे।

बदली है रिश्ते की परिभाषा

एक वक्त था, जब बड़ी स्क्रीन पर अभिनेत्री के आते ही अभिनेता के कानों में वायलिन बजने लग जाते थे। असल जिंदगी में प्यार का अहसास ही तितलियों के उड़ने–सा होता था। बदलते वक्त ने प्यार और रिश्तों की परिभाषा को बदल दिया है। इस बाबत मनोचिकित्सक सोनाली गुप्ता कहती हैं कि आज लोगों की नजरों में प्यार, खुशी के साथ ही साथ पूरी आजादी की चाहत है। यह पैटर्न थेरेपी सत्रों में भी दिखाई देता है, जहां लोग प्यार पाने, रिश्तों को बनाए रखने और रिश्तों में अकेलापन महसूस करने के अपने संघर्षों के बारे में बात करते हैं। वह कहती हैं कि इस पहेली के मूल में जो वजह है, वह है आजादी। एक रिश्ते को निभाने के लिए जरूरी हो गया है कि दो ध्रुवों के बीच आप तालमेल बिठाना सीख लें। किसी से प्यार करने के लिए जरूरी है कि हम उसकी जरूरतों के लिए जगह बनाएं और साथ ही अपनी पहचान भी बनाए रखें। निर्णय लेने की आजादी चाहत रखने से पहले अपने पार्टनर को भी यह अधिकार दें। डेटिंग ऐप्स के बढ़ते इस्तेमाल ने भी साथी खोजने के हमारे तरीके को आकार दिया है। हालांकि गैजेट्स पर हमारी निर्भरता ने भी हमारी समस्याएं बढ़ाई हैं। हम हर चीज के लिए सोशल मीडिया, तकनीक और एआई का इस्तेमाल कर रहे हैं। फिर चाहे अपने लिए नुस्खे खोजना हो या खुद के लिए सुकून। यह भी रिश्तों में समय की कमी ला रहा है। नतीजा, वह जटिल हो रहे हैं। रिश्ते को मजबूत और कामयाब बनाने की आज की जरूरत सहजता, लचीलापन और एक–दूसरे को उनका स्पेस देना है।

खुलकर करें बात

रिश्ते की शुरुआत ही संवाद यानी बातचीत से होती है। पर, वह समय के साथ–साथ कम होता जाता है। अब आप कहेंगी कि हम तो बात करते हैं। लेकिन, क्या? खाना खा लिया? कपड़े धो दिए? यहां हम सिर्फ आवश्यकता या जरूरत की बात नहीं कर रहे। आपको बात करनी चाहिए, उस डर की जो दिल में कहीं छिपा है, उस खुशी की जो आपके सपनों में छिपी हैं। जब जोड़े खुलकर अपने मन की बात करते हैं, तो एक ऐसा माहौल बनता है जिसमें न कोई जजमेंट होता है, न होता है कोई डर। न होता है कोई बड़ा और न होता है, किसी का सपना छोटा। यही वो माहौल है जिसमें रिश्ता सांस लेता है, बढ़ता है। अपनी व्यस्त दिनचर्या में एक–दूसरे के लिए समय निकालें। यह वह समय होना चाहिए, जिसमें आप सिर्फ एक–दूसरे से दिल खोलकर बात करें। बीच में किसी भी व्यवधान को न आने दें। न फोन और न कोई शख्स।

बनें एक–दूसरों के सपनों का हिस्सा

अक्सर रिश्ते में हम चलने की शुरुआत तो साथ करते हैं, पर धीरे–धीरे कोई एक पीछे रह जाता है। हम अपने करिअर को तो तरजीह देते हैं, पर अपने पार्टनर के प्रोफेशन या पैशन को पूरी तरह समझने की कोशिश नहीं करते या उसे कमतर, गैरजरूरी मान लेते हैं। ऐसा न करें। अगर आपका पार्टनर फोटोग्राफर है, तो कभी उसके साथ शूट पर जाइए। अगर साथी का कोई बिजनेस है, तो उसके तनाव और लक्ष्यों को समझने की कोशिश कीजिए। साथ मिलकर मंजिल को पाने की कोशिश कीजिए। बकौल डॉ॰ उन्नति, कभी–कभी अपने पार्टनर से ये पूछिए कि इस हफ्ते तुम्हारा सबसे बड़ा लक्ष्य क्या है और मैं उसमें कैसे मदद कर सकता हूं या सकती हूं? आपका प्रयास साथी में सकारात्मकता को बढ़ाने का काम करेगा।

स्वीकारें बदलावों को

कई बार लोग कहते हैं, वो तो पहले ऐसा नहीं था या तुम पहले जैसी नहीं रहीं। समय, परिस्थितियां, जिम्मेदारियां सभी कुछ बढ़ते और बदलते हैं। उसके साथ आप में या आपके पार्टनर में बदलाव न आए यह कैसे संभव है? आपको समझना होगा कि इंसान वक्त, अनुभवों, उम्र के साथ बदल जाता है। जो जोड़े इस बदलाव को समझते हैं और उसे अपनाते हैं, वही आगे बढ़ पाते हैं। आप भी इस बात को समझ पाएं, इसके लिए यादों को ताजा करने के लिए वक्त निकालें। संभव हो तो कुछ महीनों में एक बार साथ बैठिए, पुरानी तस्वीरें देखिए, बात कीजिए कि कहां से चले थे और अब कहां पहुंचे हैं। इससे ये अहसास बना रहता है कि हम दोनों साथ–साथ बदल रहे हैं और ये बदलाव अच्छा है।

गुस्से और घमंड से कीजिए तौबा

मेरा फोन क्यों नहीं उठाया? तुमने मेरी बात क्यों नहीं मानी? ...ऐसे सवाल–जवाब पति–पत्नी में तो चलते ही रहते हैं। बर्तन हैं, तो वो खटकेंगे ही। पर यह आपको तय करना है कि छोटी–छोटी बातों पर बहस करना आपके रिश्ते के लिए अच्छा है या दूसरे की बात को समझकर अपने अहं को हटाकर साथ बढ़ना। यह समझना होगा कि बहस में जीतना जरूरी नहीं है। जरूरी है, रिश्ते का जीतना। जब भी बहस हो, तो एक को बोल लेने दें। एक–दूसरे की बात सुनें, बीच में काटें नहीं। बहस के बाद बिना किसी गिले–शिकवे के दिन खत्म करें।

दें खुद को भी जगह

हर शख्स की अपनी पसंद होती है। याद रखें, साथ रहना जरूरी है, लेकिन हर वक्त एक साथ रहना भी स्वस्थ रिश्ते के लिए अच्छा नहीं होता। हर इंसान को अपना स्पेस चाहिए। उस वक्त में वह चाहे किताबें पढ़े, दोस्तों से मिले या अपने किसी शौक को पूरा करे। हफ्ते में कुछ घंटे सिर्फ अपने लिए रखें।

हर बार कुरकुरी और टेस्टी बनेगी भिंडी की सब्जी, बस फॉलो करें ये 5 टिप्स

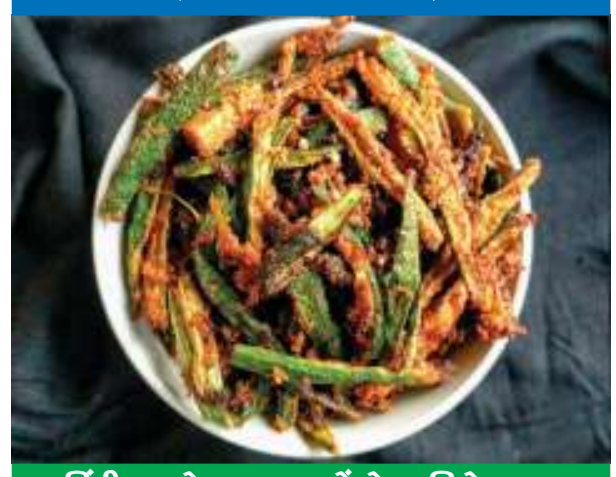

❍ भिंडी बनाते समय उसमें से म्यूकिलेज नामक पदार्थ निकलता है, जिस वजह से भिंडी काफी चिपचिपी सी हो जाती है। यहां हम आपके लिए कुछ ऐसी टिप्स ले कर आए हैं, जिन्हें फॉलो कर के आप हर बार कुरकुरी भिंडी बना सकती हैं।

भिंडी उन सब्जियों में से एक है, जिसका स्वाद भी सभी को पसंद आता है और इसमें भरपूर पोषण भी होता है। भिंडी से स्वादिष्ट सूखी सब्जी, भरवां भिंडी, भिंडी दो प्याजा जैसी कई डिशेज बनाई जाती हैं। हालांकि इन सबमें एक कॉमन समस्या आती है, वो है भिंडी की चिपचिपाहट। भिंडी बनाते समय उसमें से म्यूकिलेज नामक पदार्थ निकलता है, जिस वजह से भिंडी काफी चिपचिपी सी हो जाती है। ये खाने में भी अच्छी नहीं लगती। भिंडी का मजा तो तब है, जब इसमें हल्का कुरकुरापन बरकरार रहे। यहां हम आपके लिए कुछ ऐसी ही सिंपल टिप्स ले कर आए हैं, जिन्हें फॉलो कर के आप हर बार कुरकुरी भिंडी बना सकती हैं।

भिंडी हमेशा बनेगी कुरकुरी

1) भिंडी में म्यूकिलेज नाम का एक प्राकृतिक पदार्थ होता है, जो इसे चिपचिपा बनाता है। भिंडी बनाते समय चिपचिपी न हो, इसके लिए साबुत भिंडी को अच्छी तरह से धोकर पहले पानी सुखा लें। पानी को सुखाने के लिए टिश्यू पेपर की मदद लें। कभी भी भिंडी को काटने के बाद धोने की गलती न करें।

2) जब भी आप सब्जी बनाने के लिए भिंडी काटें, तो उन्हें छोटे आकार में काटने की बजाय लंबे टुकड़ों में काटें। लंबे टुकड़ों में काटने से भिंडी अधिक क्रिस्पी बनेगी। बेहतर होगा कि आप भिंडी की एक फली को अधिकतम दो–तीन टुकड़ों में ही काटें।

3) भिंडी को अच्छी तरह से भूनकर भी आप इसकी चिपचिपाहट दूर कर सकती हैं। यह एक असरदार तरीका है। इसके लिए कड़ाही में तेल गर्म करने के बाद भिंडी के बड़े टुकड़ों को आठ से दस मिनट तक भूनें। इसके बाद ही किसी भी तरह की अन्य सामग्री को कड़ाही में डालें।

4) भिंडी की सब्जी बनाते वक्त उसमें शुरुआत में नमक डालने की गलती न करें। जब सब्जी पूरी तरह से तैयार हो जाए, तब उसमें स्वादानुसार नमक डालकर मिलाएं। मध्यम आंच पर तीन से चार मिनट तक सब्जी को पकाएं और गैस ऑफ कर दें।

5) भिंडी की सब्जी बनाएं तो अंत में इसमें थोड़ा नीबू का रस मिला दें। दही भी चिपचिपेपन की इस समस्या से छुटकारा देगा। इमली के जूस या अमचूर पाउडर का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। सूखी सब्जी में अमचूर पाउडर या नीबू का रस डालें और गीली सब्जी में इमली का जूस या दही डालें।

52 साल की महिला ने घटाया 45 किलो वजन, कहा इन 2 चीजों से दूरी है वेट लॉस सीक्रेट

❍ 52 वर्षीय क्रिस्टी ने सिर्फ 9 महीनों में अपना 45 किलो से ज्यादा वजन कम किया है। अच्छी बात यह है कि क्रिस्टी ने पिछले सात सालों से बिना किसी सर्जरी, वजन घटाने वाले इंजेक्शन या क्रैश डाइट के अपनी सेहत और वजन को कंट्रोल करके रखा हुआ है।

आज मोटापा ज्यादातर लोगों के लिए एक बड़ी समस्या बनकर उभर रहा है। जिससे निजात पाने के लिए लोग कई तरह के शॉर्टकट जैसे इंजेक्शन, सर्जरी और डाइट के ऑप्शन अपना रहे हैं। बावजूद इसके कुछ समय बाद मोटापा वापस लौटकर मुंह चिढ़ाने लगता है। लेकिन ठीक इसके विपरीत, क्रिस्टी मैककैमन की कहानी, वेट लॉस जर्नी को बिना किसी शॉर्टकट के आसान बनाती है। बता दें, सैन एंटोनियो, टेक्सास में रहने वाली 52 वर्षीय क्रिस्टी ने सिर्फ 9 महीनों में अपना 45 किलो से ज्यादा वजन कम किया है। अच्छी बात यह है कि क्रिस्टी ने पिछले सात सालों से बिना किसी सर्जरी, वजन घटाने वाले इंजेक्शन या क्रैश डाइट के अपनी सेहत और वजन को कंट्रोल करके रखा हुआ है।

भोजन से जुड़ा जीवन भर का संघर्ष

द मिरर को दिए अपने एक इंटरव्यू में क्रिस्टी ने बताया कि भोजन के साथ उनका रिश्ता बचपन से जुड़ा हुआ है। अच्छा भोजन उसके लिए सांत्वना देने वाले दोस्त जैसे अच्छा था। क्रिस्टी ने बताया कि उनका वजन स्कूल टाइम से ही ज्यादा था और उन्होंने 10 साल की उम्र से ही डाइटिंग शुरू कर दी थी। मोटापे का यह सिलसिला किशोरावस्था और वयस्कता तक जारी रहा, जो पांच प्रेग्नेंसी के बाद और भी ज्यादा बढ़ गया।

इमोशनल फूड ईटिंग हैबिट्स

45 साल का होते ही क्रिस्टी का वेट एक बार फिर तेजी से बढ़ने लगा। जिसके बारे में उनका कहना था कि मेरा खाना–पीना नियंत्रण से बाहर हो गया था और मुझे पता था कि मैं निराश हूं और एक स्थायी समाधान खोज रही हूं। 35 साल से ज्यादा का समय अपने पति और 5 बच्चों के साथ, एक खुशहाल पारिवारिक जीवन जीने के बावजूद, क्रिस्टी को अपनी इमोशनल फूड ईटिंग हैबिट्स की वजह से काफी कुछ बर्दाश्त करना पड़ा।

जब लाइफ में आया टर्निंग प्वाइंट

क्रिस्टी ने वेट लॉस के लिए कई तरह के डाइट और वर्कआउट प्लान ट्राई करें। लेकिन उन्हें कोई भी प्लान आकर्षित नहीं कर पाया। हालांकि, कुछ समय बाद जब

एक काउंसलर ने उन्हें समझाया कि हर समय कुछ न कुछ जबरदस्ती खाने की जरूरत बिल्कुल नहीं होती है। क्रिस्टी कहती हैं कि इसके बाद मैनें यह स्वीकार किया कि मुझे चीनी की लत है। मुझे एहसास हुआ कि जीने के लिए मुझे खाना तो चाहिए, लेकिन मुझे प्रोसेस्ड शुगर और मैदा नहीं खाना है। जिसने लाइफ में सब कुछ बदल दिया। क्रिस्टी कहती हैं कि यह बदलाव रातोंरात नहीं हुआ, लेकिन क्रिस्टी ने छोटे–छोटे, सोच–समझकर कदम उठाए जिससे उन्हें वेट लॉस में स्थायी परिणाम मिले।

वेट लॉस के लिए इन चीजों से बनाई दूरी

क्रिस्टी का वेट लॉस करने का तरीका बेहद सिंपल था। उन्होंने प्रोसेस्ड शुगर और मैदा खाना बंद कर दिया और दिन में तीन टाइम संतुलित भोजन करना शुरू किया उनकी डाइट में प्रोटीन, सब्जियां, फल, अनाज और हेल्दी फैट शामिल थे। डाइट के अलावा उन्होंने अपने पोर्शन कंट्रोल पर भी भरोसा किया। जिसके बाद उनका वजन तेजी से कम होने लगा और पहले महीने में क्रिस्टी ने 9 किलो से ज्यादा और नौवें महीने तक, उनका वजन 45 किलो से ज्यादा कम हो गया था। आज भी, वह इसी लाइफस्टाइल को फॉलो करते हुए अपने फैसलों में निरंतरता बनाए रखती हैं।

बाहर के जूते ले कर घर में घूमते हो? जानें कैसे खतरनाक हो सकती है आपकी ये आदत

❍ कई लोग जिन फुटवियर को पहनकर बाहर घूमते हैं, उन्हें तुरंत ले कर घर में घुस जाते हैं और ऐसे ही घूमते रहते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो ऐसा कर के आप अपनी और बच्चों की सेहत खतरे में डाल रहे हैं।

ऐसी कई छोटी–छोटी आदतें हैं, जो हमारी हेल्थ पर बड़ा गहरा असर डालती हैं। ऐसी ही एक आदत है बाहर वाले जूते–चप्पल घर में पहनकर घूमने की। आपने देखा होगा कि कई लोग जिन फुटवियर को पहनकर बाहर घूमते हैं, उन्हें तुरंत ले कर घर में घुस जाते हैं और ऐसे ही घूमते रहते हैं। आजकल खासतौर से ये बहुत कॉमन हो गया है और लगता भी काफी नॉर्मल है। लेकिन हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो ऐसा कर के आप अपनी और बच्चों की सेहत खतरे में डाल रहे हैं। डॉक्टर रवि गुप्ता ने एक पोस्ट के जरिए बताया है कि कैसे अगर आप बाहर के जूते ले कर घर में घूम रहे हो, तो ये आपके लिए बड़ा डेंजर हो सकता है। आइए जानते हैं।

कैसे खतरनाक है ये आदत?

डॉ रवि कहते हैं कि जो जूते आप बाहर पहनकर जाते हैं, अगर उन्हें घर में पहनकर घूम रहे हैं, तो आप सिर्फ गंदगी ही नहीं बल्कि लगभग 4 लाख से ज्यादा बैक्टीरिया अपने घर में ला रहे हैं। दरअसल जूतों के नीचे ई. कोलाई, मल में पाए जाने वाले बैक्टीरिया और कई तरह के एलर्जन मौजूद होते हैं। इनमें से लगभग 90 प्रतिशत तक बैक्टीरिया आपके फ्लोर पर ही रह जाते हैं। ऐसे में जब आपके बच्चे या आप नंगे पैर इस फर्श पर खेलते या चलते हैं, तो ये आपकी हेल्थ के लिए काफी खतरनाक हो सकता है।

फिर क्या है सॉल्यूशन?

हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो जूते हमेशा घर के बाहर ही उतारने चाहिए। इसके लिए आप एंट्रेंस पर एक अलग से रैक रख सकते हैं। जब भी बाहर से आएं, तो जूतों को इस रैक में उतारें। घर में घूमने के लिए अलग से फुटवियर रखें, जिन्हें आप सिर्फ घर के भीतर ही इस्तेमाल करेंगे।

जैम से लेकर टमाटर पर दिख रहे फंगस तो जान लें किस तरह खाना है सही

❍ कुछ लोग खाने–पीने की चीजों में अगर थोड़ा फंगस दिखता है तो उसे हटाकर यूज करने लगते हैं। जैसे सब्जियों में कीड़े वाले हिस्से को काटकर इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन क्या ये सही है? जान लें किन चीजों को फंगस हटाकर यूज कर सकते हैं और किसे फेंक दें।

खाने वाली चीजों को लेकर हमेशा सावधानी बरती जाती है। इसीलिए पैकेट वाले फूड पर एक्सपायरी डेट लिखी होती है। इससे ज्यादा दिन तक उन्हें यूज नहीं करना चाहिए क्योंकि खराब होने लगती है। लेकिन सब्जियों में कीड़े या फंगस दिख रहे। या फिर खाने की चीजें जो पैकेट से बाहर आ गई हैं। अगर उनमे फंगस दिख रहा तो क्या उसे फेंक देना चाहिए? क्योंकि काफी सारे लोग हल्का–फुल्का मोल्ड या फंगस दिखता है तो उसे हटाकर यूज कर लेते हैं। लेकिन इंस्टाग्राम पर डॉक्टर एड्रियन के अकाउंट पर शेयर किया है आखिर किन चीजों को मोल्ड दिखने के बाद यूज कर सकते हैं और किन चीजों को पूरी तरह फेंक देना चाहिए।

ब्रेड

ब्रेड पर लिखी एक्सपायरी डेट से पहले इस्तेमाल कर लेनी चाहिए। लेकिन किसी वजह से अगर ब्रेड पर हल्का सा भी मोल्ड या फंगस दिखाई दे रहा उसे पूरा फेंक देना चाहिए। क्योंकि ये फंगस पूरी ब्रेड पर फैल चुका होता है।

कड़े फल और सब्जियां

जिन फल और सब्जियों का टेक्सचर कड़ा होता है। जैसे कि सेब या फिर बैंगन। ऐसे फल और सब्जियों में अगर कीड़े या मोल्ड दिख रहे हैं तो इन्हें करीब ढाई से तीन सेंटीमीटर कीड़े लगने वाली जगह से ज्यादा काटकर यूज किया जा सकता है।

सॉफ्ट और पानी वाले फल और सब्जियां

लेकिन फल अगर सॉफ्ट है जैसे केला या फिर टमाटर, अगर इनमे कीड़ा या मोल्ड दिख रहा तो पूरा ही फेंक देना चाहिए। क्योंकि ये सॉफ्ट होते हैं और इनके पूरा खराब होने के चांस ज्यादा रहते हैं।

जैम,सॉस या पैकेट वाले गीले फूड

जैम या सॉस जैसी पैकेट की चीजें या फिर जो पैकेट में हो और लिक्विड या गीली हो तो उन्हें पूरा फेंक देना चाहिए। ऐसी चीजों में दिखने वाले मोल्ड या फंगस को अनदेखा नहीं करना चाहिए और भूलकर भी खाना नहीं चाहिए।

संक्षिप्त

21 सितंबर से ग्वांगझू और नई दिल्ली के बीच शुरू करेगी नियमित उड़ान सेवा

चाइना सदर्न एयरलाइंस छह साल के अंतराल के बाद 21 सितंबर से ग्वांगझू–नयी दिल्ली मार्ग पर नियमित यात्री उड़ान सेवा फिर शुरू करेगी। एयरलाइन कंपनी ने शनिवार को यह जानकारी दी। कंपनी ने कहा कि इस सेवा की बहाली के साथ वह दक्षिण एशिया में आठ मार्गों पर हर सप्ताह 100 से अधिक उड़ानों का संचालन करेगी। चीन के दक्षिणी ग्वांगडोंग प्रांत की राजधानी ग्वांगझू में मुख्यालय वाली चाइना सदर्न एयरलाइंस चीन की प्रमुख एयरलाइन कंपनियों में से एक है। एयरलाइन की यह घोषणा ऐसे समय हुई है जब चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग शनिवार को ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ द्विपक्षीय संबंधों को और बेहतर बनाने के मुद्दे पर बातचीत करने के लिए भारत पहुंच रहे हैं। भारत और चीन के बीच उड़ान सेवाएं 2020 में कोविड–19 महामारी के बाद निलंबित कर दी गई थीं। इसके बाद पूर्वी लद्दाख में दोनों देशों के बीच चार साल से अधिक समय तक चले सैन्य गतिरोध के बीच भी इन सेवाओं को बहाल नहीं किया गया। यह गतिरोध पिछले साल अक्टूबर में समाप्त हुआ था। उड़ान सेवाओं की बहाली भारत–चीन संबंधों में धीरे–धीरे हो रहे सामान्यीकरण का हिस्सा है। संबंधों में सुधार के बीच प्रधानमंत्री मोदी और शी के बीच 2024 और 2025 में दो बैठकें हुई थीं।

ब्रिक्स देशों ने साझी करंसी पर साधी चुप्पी, स्थानीय मुद्राओं में लेनदेन पर दिया जोर

अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने की चर्चाओं के बीच ब्रिक्स देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नर की बैठक के बाद जारी संयुक्त बयान में साझा मुद्रा या डॉलर को हटाने का कोई उल्लेख नहीं किया गया। बयान में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश तथा सीमा–पार भुगतान व्यवस्था को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया है। संयुक्त बयान में न तो ब्रिक्स की साझा मुद्रा का कोई उल्लेख है और न ही अमेरिकी डॉलर को हटाने का औपचारिक आह्वान किया गया है। इसके बजाय बयान में अंतर–संचालनीय भुगतान प्रणालियों, स्थानीय मुद्राओं में लेनदेन और उन सदस्यों के बीच स्वैच्छिक सहयोग की बात कही गई है, जो राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का सम्मान करते हैं। बयान में कहा गया कि ब्रिक्स भुगतान कार्यबल (बीपीटीएफ) ने कुशल सीमा–पार भुगतान व्यवस्था के लिए व्यावहारिक समाधान तलाशने की दिशा में प्रयास किए हैं। इसमें कहा गया, ''हम बीपीटीएफ को जारी काम के आधार पर चर्चा आगे बढ़ाने और ब्रिक्स देशों के बीच सीमा–पार भुगतान के लिए ऐसे व्यावहारिक समाधान तलाशने को प्रोत्साहित करते हैं, जो तेज, कम लागत वाले, अधिक सुलभ, दक्ष, पारदर्शी और सुरक्षित हों।'' ब्रिक्स बिजनेस फोरम में शुक्रवार को ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान ने सदस्य देशों के बीच राष्ट्रीय मुद्राओं के इस्तेमाल को बढ़ाने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि सीमित संख्या में मुद्राओं पर निर्भर मौजूदा वित्तीय प्रणाली राजनीतिक झटकों के प्रति संवेदनशील है। उन्होंने एनडीबी के जरिये डॉलर पर निर्भरता कम करने वाले लेनदेन को बढ़ावा देने की भी वकालत की। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रतिबंधों और अन्य उपायों के जरिये अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सीमित करने के प्रयासों का जिक्र करते हुए ब्रिक्स के लिए ''वैश्विक वृद्धि का नया, टिकाऊ मंच'' बनाने की जरूरत बताई।

ईशान किशन की चोट से बढ़ी टीम इंडिया की टेंशन, बीच में छोड़ना पड़ा अभ्यास

अफ़गानिस्तान के ख़िलाफ़ ज्20ए सीरीज़ से पहले भारत के लिए एक चिंता की बात सामने आई है। शुक्रवार, 11 सितंबर को दिल्ली में प्रैक्टिस सेशन के दौरान विकेटकीपर–बल्लेबाज़ ईशान किशन की पीठ में चोट लग गई, जिससे रविवार को होने वाले सीरीज़ के पहले मैच में उनके खेलने पर सवाल उठने लगे हैं। किशन को यह चोट नेट्स में नवदीप सैनी का सामना करते समय लगी। बाएं हाथ के बल्लेबाज़ ने नेट बॉलर के तौर पर गेंदबाज़ी कर रहे भारतीय तेज़ गेंदबाज़ की बाउंसर से बचने के लिए झुकने की

कोशिश की, लेकिन तुरंत ही उन्हें तकलीफ़ महसूस हुई और उन्हें टीम के फ़िज़ियोथेरेपिस्ट की मदद लेनी पड़ी। यह घटना किशन के लगभग 45 मिनट के बैटिंग सेशन के आखिर में हुई। इसके बाद वह बैटिंग करने नहीं लौटे, हालांकि शुरुआती संकेतों से 13 सितंबर को अरुण जेटली स्टेडियम में होने वाले पहले ज्20ए से पहले भारत को कुछ उम्मीद बंधी। खबरों के मुताबिक, इलाज के बाद किशन बिना किसी मदद के चल पा रहे थे। उन्होंने कुछ समय अपने साथियों के साथ आइस बॉक्स पर बैठकर बिताया और फिर खुद ही मैदान से बाहर चले गए। सेशन के बाद उन्हें सैनी से थोड़ी बातचीत करते हुए भी देखा गया, और उपलब्ध तस्वीरों से लगता है कि समस्या शायद गंभीर नहीं है। यह झटका तब लगा जब किशन नेट्स में अच्छी लय में दिख रहे थे। भारतीय कप्तान श्रेयस अय्यर के साथ बैटिंग करते हुए विकेटकीपर–बल्लेबाज ने गेंद को अच्छे से हिट किया और सहज दिख रहे थे, लेकिन आखिर में चोट लगने के डर से उनका सेशन समय से पहले ही खत्म हो गया। भारत के ज्20ए सेटअप में किशन ने जो जगह बनाई है, उसे देखते हुए उनकी फ़िटनेस पर कड़ी नज़र रखी जाएगी। झारखंड के इस बल्लेबाज़ ने 2026 में 23 ज्20 इंटरनेशनल मैचों में 812 रन बनाए हैं, जो इस साल इस फ़ॉर्मेट में किसी भी बल्लेबाज़ द्वारा बनाए गए रनों में दूसरा सबसे ज़्यादा स्कोर है। ईस्ट ज़ोन के लिए दिलीप ट्रॉफ़ी में टीम को जीत दिलाने के बाद नेशनल स्क्वाड में शामिल होने के कुछ ही समय बाद उन्हें चोट लगने का डर सताने लगा है।

T20 Asia Cup फ़ाइनल में श्रीलंका के खिलाफ आठवां खिताब जीतने उतरेगी भारतीय टीम

दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में महिला ज्20 एशिया कप के फ़ाइनल में सात बार की चौंपियन भारतीय टीम का सामना श्रीलंका से होगा। टूर्नामेंट में शानदार फॉर्म में चल रहीं शैफ़ाली वर्मा और दीप्ति शर्मा से भारत को ख़िताब दिलाने में अहम योगदान की उम्मीद है। भारत इस मुकाबले को जीतकर रिकॉर्ड आठवां ख़िताब अपने नाम करना चाहेगा।

सात बार की चौंपियन भारतीय टीम रविवार को दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होने वाले महिला ज्20 एशिया कप के फ़ाइनल में मज़बूत श्रीलंकाई टीम का सामना करेगी। इस मैच में टीम को एक बार फिर शैफ़ाली वर्मा और दीप्ति शर्मा से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी। दो अर्धशतकों के साथ कुल 168 रन बनाकर शैफ़ाली न सिर्फ़ भारत की सबसे अच्छी बल्लेबाज़ रही हैं, बल्कि इस टूर्नामेंट में सबसे ज़्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी भी रही हैं। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम की पिच धीमी और स्पिनरों के लिए मददगार होने के बावजूद, उन्होंने बिना किसी दबाव के शानदार खेल दिखाया है।

स्मृति मंधाना (154 रन) का प्रदर्शन उतार–चढ़ाव भरा रहा हैकृउन्होंने एक शानदार शतक भी लगाया है और दो बार सिंगल–डिजिट स्कोर पर आउट भी हुई हैंकृवहीं शैफ़ाली ने बल्लेबाज़ी में लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। सबसे अहम बात यह है कि जिन मैचों में बाकी खिलाड़ी संघर्ष कर रही थीं, उनमें भी शेफाली ने आसानी से अपने शॉट्स खेले। श्रीलंका की कप्तान चमारी अथापथु के साथ 11–11 विकेट लेकर टूर्नामेंट में सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाली दीप्ति, भारत की बॉलिंग अटैक में सबसे आगे रही हैं। बल्लेबाज़ी में भी, भारत की यह सीनियर ऑल–राउंडर अहम भूमिका निभाती रही हैं। सेमीफ़ाइनल में बांग्लादेश के खि़लाफ़ उनकी छह गेंदों में 13 रन की पारी ने टीम के स्कोर को 150 के करीब पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई। किफ़ायती गेंदबाज़ी करने वाली श्री चरानी और अपनी लय में लौट रही प्रेमा रावत के साथ मिलकर, दीप्ति उस स्पिन अटैक की अगुवाई करती हैं जिसने इस टूर्नामेंट के कई मैचों में दबदबा बनाए रखा है। हालांकि दोनों टीमें फ़ाइनल तक बिना कोई मैच हारे पहुंची हैं और उनका आत्मविश्वास बढ़ा हुआ है, फिर भी भारत को श्रीलंका की मज़बूत टीम से सावधान रहना होगा। इसी टीम ने 2024 के पिछले फ़ाइनल में भारत को आठ विकेट से करारी शिकस्त दी थी। अथापट्टू की टीम ने वही जज़्बा दिखाया है जो उनकी कप्तान ने अपने उतार–चढ़ाव भरे करियर में दिखाया है। इसका ताज़ा उदाहरण सेमीफ़ाइनल में मुश्किल हालात के बावजूद पाकिस्तान पर मिली जीत है। शुरुआती दो ओवरों में ही 5/2 और सातवें ओवर तक 33/4 के स्कोर पर आ जाने के बावजूद, श्रीलंका ने 131 रन के लक्ष्य का पीछा करना नहीं छोड़ा। हर्षिता समरविक्रमा ने सबसे ज़्यादा 36 रन बनाए और दूसरे छोर से कविशा दिलहारी (33) का अच्छा साथ मिलने से श्रीलंका की पारी पटरी पर लौटी। इसके बाद नीलाक्षिका सिल्वा और कौशिनी नुथ्यांगना की जोड़ी ने मुश्किल हालात में भी शांत और संयमित अंदाज़ में लक्ष्य हासिल किया।

दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान हस्तशिल्प बाजार आयोजित, कई देशों की कला प्रदर्शित

दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अवसर पर लगाए गए हस्तशिल्प बाजार में सदस्य

और साझेदार देशों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक देखने को मिल रही है। मिट्टी से कलाकृतियां बनाने वाली ब्राजील की सदियों पुरानी कला से लेकर बेलारूस की पारंपरिक 'विलो वीविंग' तक के हस्तशिल्प इस बाजार में प्रदर्शित किए गए हैं। 'विलो वीविंग' पेड़ की लचीली और पतली टहनियों को आपस में बुनकर उपयोगी और सजावटी वस्तुएं बनाने की पारंपरिक कला है। इन टहनियों से टोकरियां, फर्नीचर, सजावटी सामान और घरेलू उपयोग की अन्य वस्तुएं बनाई जाती हैं। यह बेलारूस की पुरानी लोक कलाओं में शामिल है। भारत मंडपम के पास स्थित राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय एवं हस्तकला अकादमी परिसर में यह बाजार लगाया गया है। भारत ने एक जनवरी को ब्रिक्स की अध्यक्षता संभाली थी और वर्ष 2026 में समूह की स्थापना के 20 वर्ष भी पूरे हो रहे हैं। ब्रिक्स–2026 की आधिकारिक वेबसाइट में कहा गया कि बाजार में सदस्य और साझेदार देशों के कारीगरों, डिजाइनरों और रचनात्मक उद्यमों के उत्पाद प्रदर्शित किए गए हैं। इनमें हस्तशिल्प, हथकरघा, वस्त्र, कलाकृतियां और अन्य पारंपरिक उत्पाद शामिल हैं। यह बाजार 10 सितंबर से शुरू हुआ है और 15 सितंबर तक लगा रहेगा। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा और कई अन्य नेता 12 और 13 सितंबर को हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल हो रहे हैं। बेलारूस की ओर से मोलोडेचनो की प्रसिद्ध 'विलो वीविंग' लाना स्लास्तिसयोन ने 'वर्बाच्का' लोक शिल्प समूह का प्रतिनिधित्व किया है। मिट्टी के बर्तन एवं कलाकृतियां बनाने वाली ब्राजील की शिल्पकार एवं मूर्तिकार क्लेजियानिया रिबेरो डी लीमा पाइव भी बाजार में अपनी कला का प्रदर्शन कर रही हैं। ब्राजील की मृदा शिल्प को अमेरिका की सबसे पुरानी जीवित परंपराओं में से एक बताया गया है। कजाकिस्तान के कलाकार एवं आभूषण डिजाइनर सेरिक रिस्बेकोव ने पारंपरिक कजाख प्रभावों को आधुनिक डिजाइन के साथ जोड़ा है। ईरान की कलाकार नादिया करीमी ने बलूची कढ़ाई की पारंपरिक कला को संरक्षित करने और उसे आगे विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

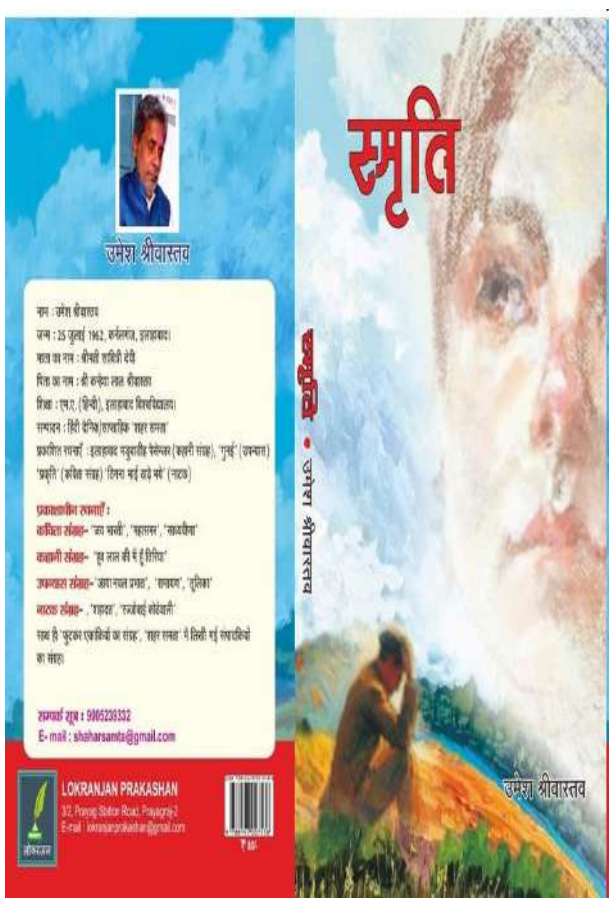

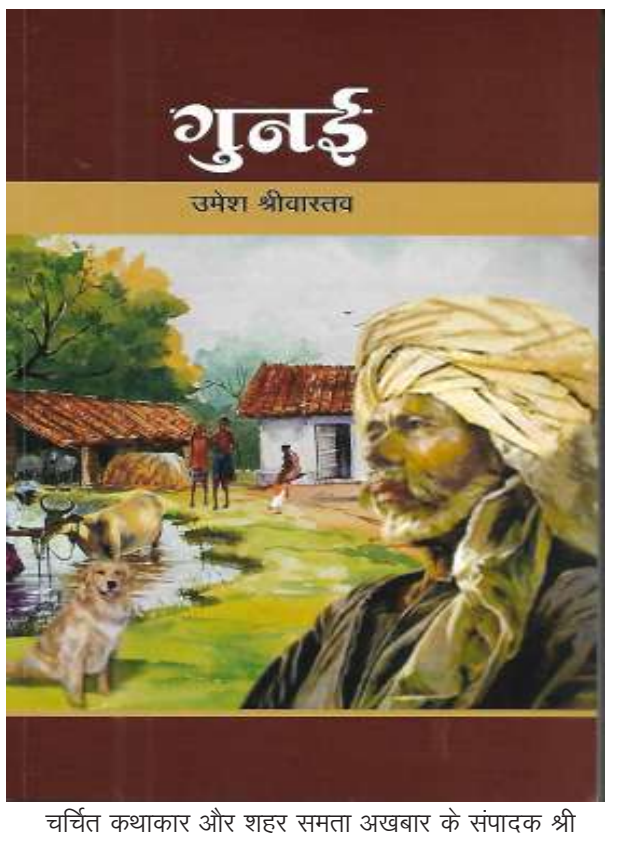

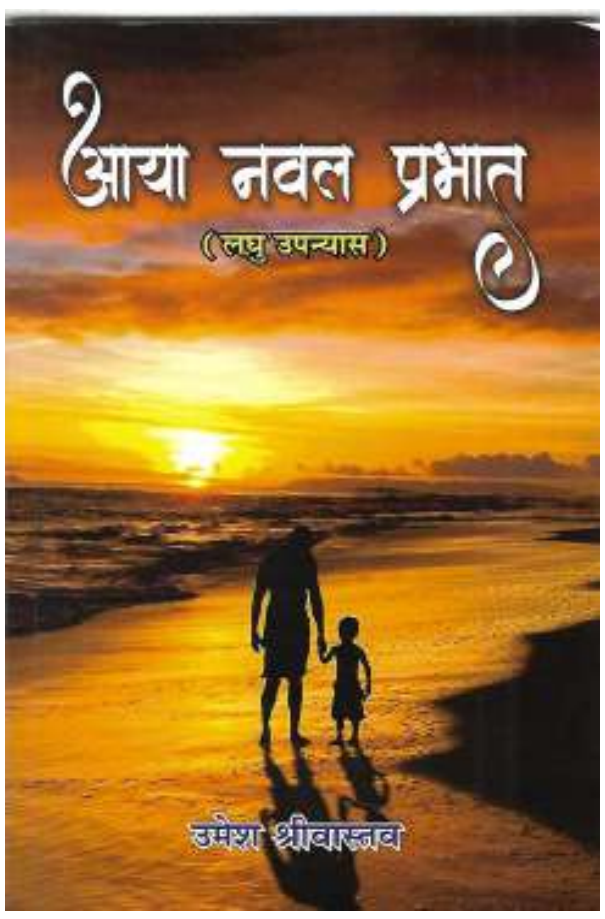

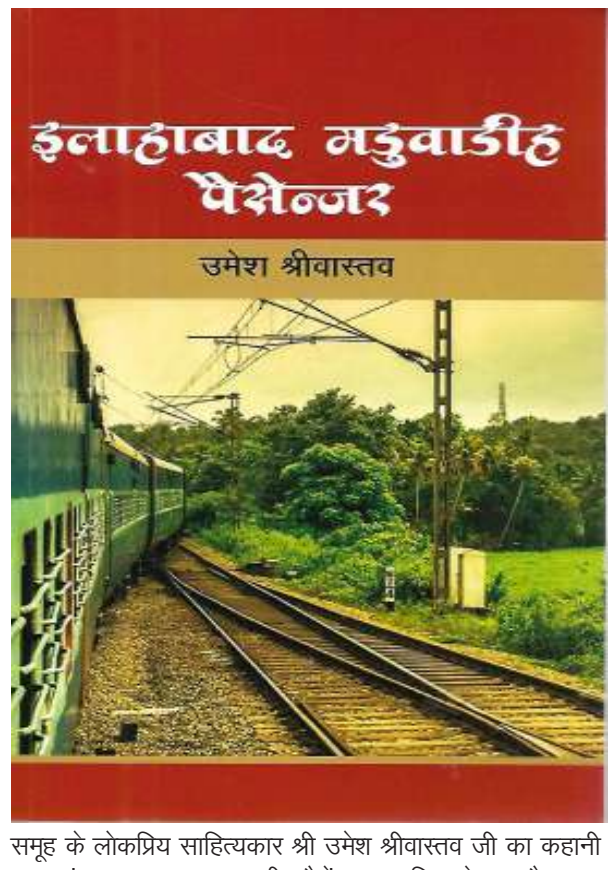

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

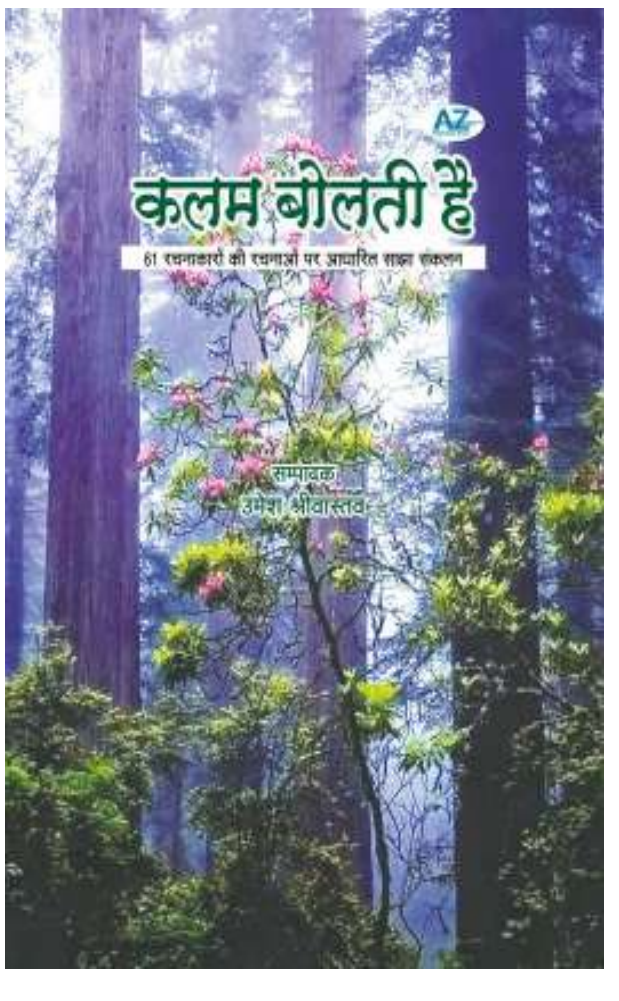

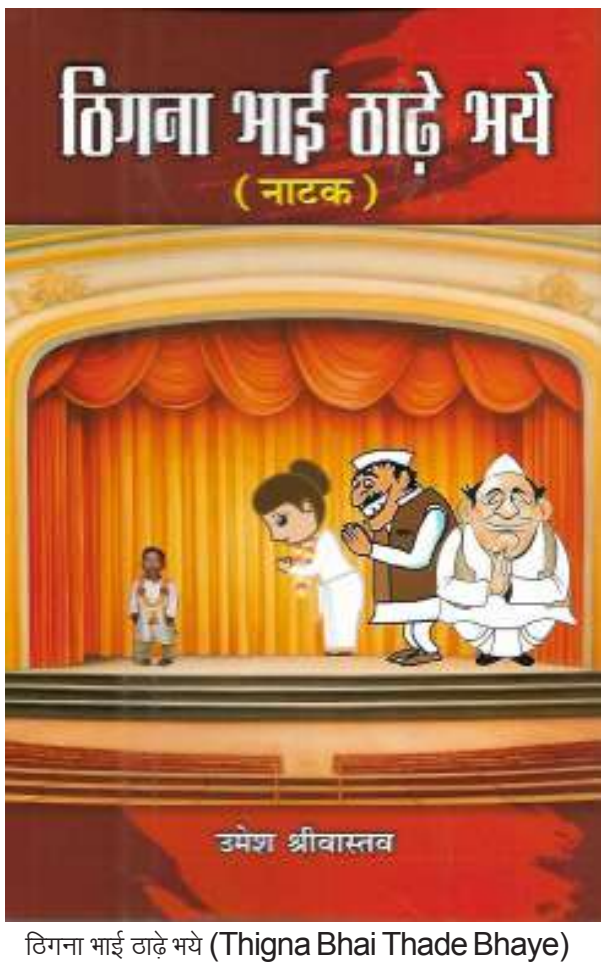

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

पुतिन ने योगी को दिया बड़ा तोहफा, देखती रह गई दुनिया!

भारत की राजधानी दिल्ली 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की ऐतिहासिक मेजबानी कर रही है। बड़ी–बड़ी शक्तियां भारत में कदम रख रही हैं। चीनी राष्ट्रपति श्री जिंगपिंग के भारत दौरे पर जहां दुनिया की नजरें निगाहें बनी हुई है, वहीं दूसरी तरफ रूसी राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन दिल्ली में दस्तक दे चुके हैं। जिस वक्त पुतिन ने भारत में कदम रखा, दुनिया देखती रह गई। लेकिन असली खेल तो पुतिन के भारत में कदम रखने से ठीक पहले हुआ। पुतिन की वजह से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रदेश में कुछ ऐसा हुआ जिसने ग्लोबल डिप्लोमेसी से लेकर एिएशन सेक्टर में तहलका ही मचा दिया। जब राष्ट्रपति पुतिन भारत की धरती पर कदम रखने वाले थे। उससे पहले ही रूस ने सीएम योगी और उनके ड्रीम प्रोजेक्ट को एक ऐसा इंटरनेशनल सरप्राइज दे दिया जिसकी गूंज पूरे भारत से लेकर मॉस्को तक सुनाई दे रही है। बड़ा तोहफा यह है कि ब्रिक्स सम्मेलन के सुरक्षा इंतजामों के बीच रूसी वायु सेना और राष्ट्रपति पुतिन की एडवांस सिक्योरिटी का पूरा भारी भरकम जत्था दिल्ली के आईजीआई की बजाय सीधे ग्रेटर नोएडा के जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतार दिया गया। यह जेवर एयरपोर्ट के रनवे पर किसी भी विदेशी सैन्य विमान की सबसे पहली लैंडिंग है। जो तीन रूसी जहाज जेवर एयरपोर्ट पर उतरे हैं, उसमें रूसी मिलिट्री ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट आईएल76 भी है। इस विमान से रूस की एक एडवांस टीम और मिलिट्री अधिकारी भारत पहुंचे हैं। तो रूसी विमान की लैंडिंग में यूपी के इस इंटरनेशनल जेवर एयरपोर्ट की ब्रांडिंग पूरी दुनिया में हो रही है। चारों तरफ जेवर एयरपोर्ट की चर्चा हो रही है। तारीफ हो रही है। इस विशालकाय विमान के साथ रूसी सेना के दो और रणनीतिक प्लेन जेवर एयरपोर्ट के रनवे पर एक–एक कर लैंड हुए। किसी भी नए और आधुनिक एयरपोर्ट के लिए सबसे बड़ी बात और क्या हो सकती है कि उसकी पहली अंतरराष्ट्रीय लैंडिंग ही दुनिया की सुपर पावर रूसी सेना के भारीभरकम विमानों के साथ हुई है। इन विमानों में रूसी राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन की सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाले हाई लेवल एडवांस सिक्योरिटी तीन रूसी सेना के शीर्ष अधिकारी और अत्याधुनिक सर्लिांस उपकरण भारत पहुंचे हैं। इतना ही नहीं इन कार्गो प्लेंस के पिछले हिस्से में राष्ट्रपति पुतिन के स्पेशल काफिले में शामिल होने वाली बेहद खतरनाक और बख्तरबंद बुलेट प्रूफ गाड़ियां और सीक्रेट सेटेलाइट कम्युनिकेशंस व्हीकल्स भी उतारे गए हैं। हालांकि राष्ट्रपति पुतिन का अपना वीवीआईपी प्लेन दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंड हुआ। लेकिन उनकी पूरी बैकअप सिक्योरिटी और फ्लट का हब बना योगी का उत्तर प्रदेश। आमतौर पर किसी भी अंतरराष्ट्रीय स्तर के बड़े इवेंट या वीवीआईपी मूवमेंट के लिए दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट का इस्तेमाल ही किया जाता है। तमाम देशों के राष्ट्रीय अध्यक्ष जब आए हैं, दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट पर ही उनका काफिला और उनके सुरक्षा इक्विपमेंट उतारे गए हैं। लेकिन ब्रिज सम्मेलन के दौरान वायुसेना और नागरिक उड़न मंत्रालय के विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल और एक्स्ट्रा एयर ट्रैफिक को मैनेज करने के लिए जेवर एयरपोर्ट को पहली पसंद बनाया गया। जेवर के रनवे पर उतरे तीनों रूसी सैन्य विमान इस वक्त पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बने हुए हैं। जेवर एयरपोर्ट ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपयोगिता, क्षमता और सुरक्षा मानकों को साबित कर दिया है। रूस के इस कदम ने जेवर एयरपोर्ट को वैश्विक मीडिया की सुर्खियों में ला दिया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए एक बड़ा कूटनीतिक और आर्थिक माइलेज है। क्योंकि जिस जेवर एयरपोर्ट को यूपी के इंफ्रास्ट्रक्चर के मुख्य स्तंभ के रूप में पेश किया जा रहा है। उसकी पहली ही परीक्षा रूसी राष्ट्रपति के बेड़े ने पास कर दी है। लेकिन अगर आप ध्यान से कड़ियों को जोड़ेंगे तो आपको समझ में आ जाएगा कि रूस और योगी आदित्यनाथ के उत्तर प्रदेश का यह नाता कोई अचानक हुआ संयोग मात्र नहीं है। उत्तर प्रदेश आज भारत और रूस के बीच सुरक्षा संयोग का सबसे बड़ा स्थान बन चुका है। वो कैसे? चलिए आंकड़ों के साथ ही बता देते हैं। यूपी की राजधानी लखनऊ में भारत और रूस का सबसे आधुनिक और बड़ा ब्रह्मोस मिसाइल निर्माण केंद्र काम कर रहा है। वो सीएम योगी आदित्यनाथ के प्रोफाइल और प्राथमिकताओं में यह सुपरसोनिक मिसाइल प्रोजेक्ट हमेशा प्राथमिकता पर रहता है। अमेठी में रूस के तकनीकी सहयोग से भारतीय सेना के लिए दुनिया के सबसे घातक ।झ203 असॉल्ट राइफल्स का बड़े पैमाने पर उद्घाटन किया जा रहा है। यानी चाहे ब्रह्मोस जैसी आधुनिक मिसाइलें हो। ।झ203 जर्सी असॉल्ट राइफल हो या फिर रूसी सेना के विशालकाय मिलिट्री कार्गो एयरक्राफ्ट।

सऊदी अरब ने ड्रोन हमले के बाद ईस्ट–वेस्ट पाइपलाइन का संचालन रोका

सऊदी अरब ने शुक्रवार को कहा कि उसने ड्रोन हमले के एक दिन बाद एक प्रमुख तेल पाइपलाइन को बंद कर दिया है, वहीं यमन के ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने लाल सागर के दक्षिणी प्रवेश द्वार पर स्थित एक रणनीतिक द्वीप पर कब्जा कर लिया है। अधिकारियों ने कहा कि इन दोनों घटनाओं को ईरान युद्ध में एक नए मोर्चे के तौर पर देखा जा रहा है। हूती विद्रोहियों ने बाब–अल–मंदेब जलडमरूमध्य के पास वर्षों में अपनी सबसे बड़ी क्षेत्रीय बढ़त हासिल की है। यह दुनिया के प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है। इस बढ़त से ईरान की उस रणनीति को बल मिल सकता है, जिसके तहत वह अमेरिका पर दबाव बनाने के लिए वैश्विक तेल और गैस की कीमतें बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। सऊदी अरब ने कहा कि उसने ईस्ट–वेस्ट पाइपलाइन को बंद कर दिया है। यह पाइपलाइन एक दिन पहले हमले का शिकार हुई थी। सऊदी ऊर्जा मंत्रालय ने पाइपलाइन बंद करने के कदम को ''एहतियाती'' बताया। सऊदी विदेश मंत्रालय ने इस हमले के लिए इराक से आए कई ड्रोन को जिम्मेदार ठहराया। सरकारी समाचार एजेंसी 'सऊदी प्रेस एजेंसी' में विदेश मंत्रालय के हवाले से जारी बयान में कहा गया कि वह जवाबी कार्रवाई नहीं करेगा, ताकि इराकी सरकार को ''जरूरी कदम उठाने का मौका'' मिल सके। इराक के प्रधानमंत्री अली अल–जैदी ने घटना की जांच का आदेश दिया है। सरकार के प्रवक्ता सबाह अल–नुमान ने शनिवार तड़के एक बयान में कहा कि अधिकारियों ने यह पता लगाया कि सऊदी अरब को निशाना बनाकर किए गए हमले मायसान प्रांत में स्थित एक स्थान से किए गए थे, जिसके बाद कमान के प्रमुख को पद से हटा दिया गया। सऊदी अरब और अमेरिका ने जुलाई में इराक में ईरान समर्थित मिलिशिया समूहों पर बमबारी की थी। उन्होंने इन समूहों को सऊदी तेल प्रतिष्ठानों पर हुए ड्रोन हमलों के लिए जिम्मेदार ठहराया था। क्षेत्रीय अधिकारियों ने 'एसोसिएटेड प्रेस' को बताया कि हूतियों ने इराकी मिलिशिया समूहों को हमलों की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने में मदद की थी।

ईरानी राष्ट्रपति की बेटी जहरा पहुंचीं ब्रिक्स बाज़ार, पारंपरिक क्राफ्ट्स और टेक्सटाइल का किया दीदार

ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियान की बेटी ज़हरा पेज़ेश्कियान और उनके पति हसन मजीदी ने नई दिल्ली के नेशनल क्राफ़्ट्स म्यूज़ियम में ब्रिक्स बाज़ार का दौरा किया। वहाँ उन्होंने ब्रिक्स के सदस्य और सहयोगी देशों के टेक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट और सांस्कृतिक प्रदर्शनों को देखा। भारत में ईरानी दूतावास के आधिकारिक अकाउंट से इस दौरे की जानकारी दी गई, जिससे राजधानी में चल रही ब्रिक्स गतिविधियों में एक सांस्कृतिक पहलू भी जुड़ गया। बाज़ार के वीडियो में ज़हरा काले अबाया में टेक्सटाइल और क्राफ़्ट के प्रदर्शन (जिसमें ईरान का स्टॉल भी शामिल था) को देखती हुई और "ब्रिक्स इंडिया 2026" के बैकड्रॉप के सामने भारतीय प्रतिनिधियों के साथ तस्वीरें खिंचवाती हुई नज़र आ रही हैं। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री और कोडरमा लोकसभा सांसद अन्नपूर्णा देवी ने भी इस दौरे की कई तस्वीरें शेयर कीं। बाज़ार में ज़हरा का स्वागत करते हुए उन्होंने लिखा, ष्नई दिल्ली के नेशनल क्राफ़्ट्स म्यूज़ियम में रुठत्प्ैढ्ढंत में ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेज़ेश्कियान की बेटी ज़हरा पेज़ेश्कियान का स्वागत करके खुशी हुई। उन्होंने आगे कहा उन्हें बाज़ार घुमाने और ठत्प्ै सदस्य और सहयोगी देशों की समृद्ध परंपराओं, कला, शिल्प और सांस्कृतिक विरासत को दिखाने का मौका मिला। नएस्थान तलाशें नई दिल्ली में नेशनल क्राफ्ट्स म्यूज़ियम और हस्तकला अकादमी में 10 से 15 सितंबर तक आयोजित हो रहा श्ब्रिक्स बाज़ारश, पारंपरिक कारीगरी को ब्रिक्स के बड़े कार्यक्रम के केंद्र में रखता है। इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले देशों की खास सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाने वाले टेक्सटाइल और शिल्प शामिल हैं। इसमें बुने हुए स्ट्राइप्स और इकत डिज़ाइन, ब्रोकेड और जैक्वार्ड का काम, साथ ही प्रिंटेड और रंगे हुए सूती और रेशमी कपड़े शामिल हैं। देशों के लिए बने पैनल में ईरान, भारत, चीन, ब्राज़ील, बोलीविया, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, कज़ाकिस्तान, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, उज़्बेकिस्तान, क्यूबा, घ्ब्बेलारूस, मलेशिया, नाइजीरिया, युगांडा और वियतनाम के साथ–साथ अन्य पार्टनर और सदस्य देशों की प्रदर्शनियां भी शामिल हैं। ईरानी पैनल बड़े टेक्सटाइल इंस्टॉलेशन का हिस्सा है, जो बुनाई, प्रिंटिंग और रंगाई की अलग–अलग क्षेत्रीय परंपराओं को एक ही विज़ुअल डिस्प्ले में एक साथ लाता है। भारत के विदेश मंत्रालय और कपड़ा मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित और 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी के साथ हो रहे इस बाज़ार की थीम है फ्क्राफ्टिंग कल्चर्स, कनेक्टिंग पीपलष (संस्कृतियों को गढ़ना, लोगों को जोड़ना)।

हमें झुकाया नहीं जा सकता...भारत से गरजे पेजेश्कियान, यूएस को दी सीधी चेतावनी

ब्रिक्स समिट के लिए भारत पहुंचे ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजिशियान ने पीएम मोदी से मुलाकात की और दोनों नेताओं के बीच पश्चिम एशिया के मौजूदा हालात से लेकर भारत ईरान के रिश्तों और आगे के सहयोग पर विस्तार से बातचीत हुई। इस मुलाकात के बीच पेशकियान ने भारत से ईरान का रुख भी साफ शब्दों में दुनिया के सामने रखा। दरअसल पीएम मोदी से मुलाकात के कुछ ही देर बाद ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजिशियान ब्रिक्स बिजनेस फोरम के लीडर्स सेशन में पहुंचे और यहां उन्होंने ईरान के रुख को लेकर बड़ा बयान दिया। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और अमेरिका के साथ टकराव के बीच प्रिजिशियान ने साफ कहा कि ईरान दबाव और धमकी के आगे झुकने वाला नहीं है। पेजिशियान ने कहा कि ईरान अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए मजबूती से खड़ा रहेगा। उन्होंने अमेरिका और इजराइल पर ईरान पर दबाव बनाने और उसके खिलाफ कारवाई करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अगर ईरान पर दबाव बनाया जाएगा तो वो उसका जवाब देने के लिए तैयार है। एक तरफ मोदी से मुलाकात के बाद जब प्रदेशान ब्रिक्स के कारोबारी मंच पर पहुंची तो वहां से उन्होंने अपने देश की स्थिति को लेकर बेहद सख्त संदेश दे दिया।न का बयान सिर्फ युद्ध और तनाव तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने आर्थिक मोर्चे पर भी बड़ा मुद्दा उठाया। ईरानी राष्ट्रपति ने ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार में स्थानीय मुद्राओं के इस्तेमाल को बढ़ाने की पैरवी की और कहा कि दुनिया इस वक्त एक जटिल दौर से गुजर रही है और किसी देश के आर्थिक दबाव का असर दूसरे देशों के वैध व्यापार पर नहीं पड़ना चाहिए। विदेशान ने ब्रिक्स से ऐसा माहौल बनाने की अपील की जहां कई देश अपने वित्तीय ताकत या वित्तीय व्यवस्था का इस्तेमाल कर दूसरे देश के वैध कारोबार को रोक ना सके। उनका जोर ब्रिक्स देशों के बीच आपसी आर्थिक सहयोग को मजबूत करने और कारोबार में डॉलर पर निर्भरता कम करने पर रहा। कुल मिलाकर कर ईरान की मंशा साफ है। व्यापार में स्थानीय मुद्राओं के इस्तेमाल को बढ़ाना चाहिए। हालांकि ईरानी राष्ट्रपति और पीएम मोदी की मुलाकात को अगर देखा जाए तो यह मुलाकात भारत मंडपम में हुई। दोनों नेताओं के बीच बातचीत में पश्चिम एशिया के मौजूदा हालात प्रमुख मुद्दे में रहे। क्षेत्र में बढ़ते तनाव के बीच पीएम मोदी ने साफ कहा कि स्थाई शांति का रास्ता बातचीत और कूटनीति से ही निकल सकता है। पीएम मोदी ने समुद्री रास्तों को सुरक्षित रखने और व्यापार की आवाजाही को जारी रखने पर भी जोर दिया। खासतौर पर समुद्र में काम करने वाले लोगों यानी सीफेरस की सुरक्षा को भारत की प्राथमिकता बताया गया। वहीं पीएम मोदी से मुलाकात के बाद प्रदेश के ने बातचीत को सकारात्मक बताया और कहा कि दोनों नेताओं के बीच अच्छी चर्चा हुई और इसमें व्यापार तकनीक और संस्कृति के क्षेत्र में भारत ईरान सहयोग को आगे बढ़ाने का रास्ता खुलेगा। यानी भारत ने एक और शांति और बातचीत के रास्ते पर जोर दिया। जबकि ईरान ने साफ कर दिया कि वह दबाव में झुकने वाला नहीं है। एक तरह से ईरान ने भारत में बैठकर अमेरिका को सीधा संदेश दे दिया।

दुनिया पर मंडराया बड़ा 'एनर्जी क्राइसिस': लाल सागर के रणनीतिक द्वीप पर हूतियों का कब्जा, सऊदी की मुख्य तेल पाइपलाइन ठप!

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच एक बेहद खतरनाक मोड़ सामने आया है। यमन के ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने लाल सागर के दक्षिणी प्रवेश द्वार पर स्थित सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मायून (पेरिम) द्वीप पर नियंत्रण कर लिया है। इस घटनाक्रम ने वैश्विक समुद्री व्यापार मार्ग पर तनाव को कई गुना बढ़ा दिया है, जिससे वैश्विक बाजार में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतों में भारी उछाल आने की आशंका उत्पन्न

हो गई है। यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार और हूती अधिकारियों, दोनों ने ही बाब अल–मंदेब जलडमरूमध्य में स्थित इस ज्वालामुखीय द्वीप पर कब्जे की पुष्टि की है। यह हाल के वर्षों में हूती विद्रोहियों का सबसे बड़ा क्षेत्रीय विस्तार माना जा रहा है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

दुनिया के सबसे प्रमुख समुद्री मार्ग पर हूतियों का नियंत्रण

हूती विद्रोहियों ने बाब अल–मंदेब जलडमरूमध्य के आसपास कई वर्षों में अपना सबसे बड़ा क्षेत्रीय विस्तार किया है। यह दुनिया के प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है। इस घटनाक्रम से ईरान को अमेरिका पर दबाव बढ़ाने के लिए दुनिया में तेल और गैस की कीमतें बढ़ाने की अपनी रणनीति को आगे बढ़ाने में मदद मिल सकती है। इस बीच, सऊदी अरब ने कहा कि उसने उसकी एक पाइपलाइन पर हमले के एक दिन बाद उसे बंद कर दिया।

CIA ने 9/11 हमलों की 25वीं बरसी पर ओसामा बिन लादेन और अलकायदा से जुड़ीं खुफिया रिपोर्ट कीं सार्वजनिक

अमेरिका में 11 सितंबर 2001 को हुए आतकंवादी हमलों की 25वीं बरसी पर शुक्रवार को दर्जनों ऐसी खुफिया रिपोर्ट सार्वजनिक की गईं जिन्हें राष्ट्रपति के लिए तैयार किया गया था। इनमें उन खुफिया जानकारियों का ब्योरा है, जो सरकारी अधिकारियों ने विमानों के अपहरण से पहले ओसामा बिन लादेन और अलकायदा के बारे में जुटाई थीं। इन हमलों में कम से कम 3000 लोग मारे गए थे। इन दस्तावेजों में सुरक्षा विश्लेषकों द्वारा बिन लादेन की गतिविधियों और उसके समर्थन तंत्र पर नजर रखने के साथ–साथ अमेरिकी ठिकानों पर संभावित खतरों को लेकर जताई गई चिंताओं का भी उल्लेख है। इनमें अमेरिका और अन्य देशों में उसके नेटवर्क को लेकर अधिकारियों की समझ तथा उसके अभियानों के लिए धन जुटाने के तरीकों का भी ब्योरा है। सीआईए निदेशक जॉन रैटक्लिफ ने इसे ''असाधारण पारदर्शिता का कदम'' बताते हुए कहा कि ये दस्तावेज राष्ट्रपति के लिए तैयार की जाने वाली खुफिया रिपोर्ट को सार्वजनिक करने का एजेंसी का अब तक का सबसे बड़ा संग्रह है। इस तरह की रिपोर्ट देश के खुफिया समुदाय द्वारा सरकार के शीर्ष अधिकारियों के लिए तैयार की जाती हैं और इन्हें अत्यंत गोपनीय रखा जाता है। दस्तावेजों में फरवरी 1998 की एक रिपोर्ट भी शामिल है, जिसे तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के लिए तैयार किया गया था। इसका शीर्षक ''आतंकवादी सामूहिक विनाश के हथियार बनाने की क्षमता हासिल करने की कोशिश में'' हैं और इसमें बिन लादेन तथा अन्य इस्लामी चरमपंथियों का उल्लेख है। वहीं, 12 सितंबर 2001 की एक रिपोर्ट में एक सूत्र ने बताया था कि हमलों की योजना दो साल से बनाई जा रही थी। अप्रैल 1998 के एक दस्तावेज में लादेन को सौंपने के मुद्दे पर तालिबान की अनिच्छा का उल्लेख किया गया था। उस समय अफगानिस्तान में लादेन को तालिबान का ''मेहमान'' माना जाता था। दस्तावेज में कहा गया था कि सोवियत कब्जे के दौरान लादेन की मदद के लिए तालिबान उसके प्रति आभारी था और इसी वजह से वे उसकी गतिविधियों पर नजर रखकर या उन्हें नियंत्रित करके उसे नाराज करने से ''हिचक रहे थे।'' जुलाई 1998 में रिपोर्ट तैयार करने वाले अधिकारियों ने कहा था कि ''यह संभव है कि लादेन अमेरिका में हमले करने को प्राथमिकता देता है'' और वे (अधिकारी) रासायनिक तथा जैविक हथियारों से हमले करने में लादेन की रुचि से भी अवगत थे। दो महीने बाद एक अधिकारी ने लिखा कि लादेन का ''पसंदीदा विकल्प अमेरिका की धरती पर वाशिंगटन में हमला करना है'' और अलकायदा ''विस्फोटकों से भरे विमान को अमेरिका के किसी शहर में गिरा सकता है।'' दिसंबर 1998 में एक रिपोर्ट में संभावित विमान अपहरण की घटना का भी जिक्र था। रिपोर्ट तैयार करने वाले अधिकारी ने कहा था कि साजिशकर्ताओं ने ''न्यूयॉर्क के एक अज्ञात हवाई अड्डे पर हाल में किए गए परीक्षण के दौरान सुरक्षा जांच से बच निकलने में सफलता हासिल की'' और '' लादेन के नेटवर्क के कुछ सदस्यों ने विमान अपहरण का प्रशिक्षण लिया था।'' अन्य दस्तावेजों में बिन लादेन द्वारा ''डर्टी बम'' बनाने के लिए सामग्री हासिल करने के प्रयासों का भी उल्लेख है। डर्टी बम ऐसे पारंपरिक हथियार होते हैं, जिनमें रेडियोधर्मी सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है। खुफिया अधिकारियों के अनुसार, जून 1999 तक उसके गुर्गों ने विस्फोटकों के साथ ऐसे प्रयोग किए थे, ताकि ''उनकी ऊर्जा क्षमता बढ़ाई जा सके।'' हमलों से करीब दो साल पहले ही खुफिया अधिकारियों को पता था कि लादेन अमेरिका पर बिना उकसावे के हमला नहीं करने को लेकर तालिबान को गुमराह करता हुआ दिखाई दे रहा था। 2001 की शुरुआत में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के लिए तैयार की गई रिपोर्ट में बिन लादेन द्वारा ''जैविक एजेंट बनाने और उन्हें इस्तेमाल करने के लिए तात्कालिक तरीकों से किए जा रहे प्रयोग'' पर खास तौर पर ध्यान दिया गया था। हमलों से एक महीने पहले की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि लादेन ''अमेरिका में आतंकवादी हमले करने के लिए प्रतिबद्ध'' था। इसमें कहा गया था कि 1998 में अमेरिकी दूतावासों पर अलकायदा के हमले ''दिखाते हैं कि वह अभियानों की तैयारी वर्षों पहले करता है और असफलताओं से उसका इरादा नहीं बदलता।'' उस समय यानी अगस्त 2001 में एक रिपोर्ट में अधिकारियों ने ''इस देश में ऐसी संदिग्ध गतिविधियों'' का भी उल्लेख किया था, जो विमान अपहरण या अन्य तरह के हमलों की तैयारी से जुड़ी हो सकती थीं। इनमें न्यूयॉर्क में संघीय इमारतों की हालिया निगरानी भी शामिल थी। अधिकारियों ने कहा था कि एफबीआई पूरे अमेरिका में बिन लादेन से जुड़ी करीब 70 व्यापक जांच कर रही थी।

कई दस्तावेजों में सूत्रों के नाम और अन्य पहचान संबंधी जानकारी छिपाने के लिए कुछ हिस्सों को हटाया गया है। हालांकि इन दस्तावेजों से हमलों की योजना या अमेरिकी अधिकारियों की यह समझ कि हमले कैसे हुए थे, उसके बारे में कोई नई महत्वपूर्ण जानकारी सामने आती नहीं दिखी। दस्तावेज जारी किए जाने पर प्रतिक्रिया मांगे जाने पर व्हाइट हाउस ने शुक्रवार को राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा जारी किए गए दस्तावेजों के एक अन्य संग्रह का भी उल्लेख किया।

रूस पर प्रतिबंध और भारत पर टैरिफ से जुड़े विधेयक पर अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में अगले सप्ताह मतदान

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा अगले सप्ताह रूस पर प्रतिबंधों से जुड़े एक बेहद कड़े और चर्चित विधेयक पर मतदान करने जा रही है। 'लिंडसे ओ ग्राहम सैंक्शनिंग रशिया एंड ईरान एक्ट, 2026' नामक यह विधेयक यदि पारित हो जाता है, तो यह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को रूस के साथ–साथ रूसी तेल और प्राकृतिक गैस खरीदने वाले भारत जैसे प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों पर भारी टैरिफ (शुल्क) लगाने के व्यापक अधिकार प्रदान करेगा। यह विधेयक पिछले महीने अमेरिकी सीनेट द्वारा भारी बहुमत से पारित किया जा चुका है।

जिनपिंग के प्लेन ने भारत में किया लैंड, उधर चीन के कर दिया बड़ा ऐलान

7 साल का लंबा इंतजार और अब एशिया की दो सबसे बड़ी महाशक्तियों का आमनासामना। जी हां, राष्ट्रपति शी जिनपिंग 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए नई दिल्ली में दस्तक दे चुके हैं और उनका विमान दिल्ली के पालम एयर बेस पर उतरा। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग नई दिल्ली पहुँच गए हैं और उनका विमान पालम एयर फ़ोर्स बेस पर उतरा है। चीन के प्रतिनिधिमंडल में कै ची (ब्प फप) और वांग यी (दह ल्प) शामिल हैं। कै ची, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ चाइना (ब्ब्) की सेंट्रल कमिटी के पॉलिटिकल ब्यूरो की स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य और ब्ब् सेंट्रल कमिटी के जनरल ऑफ़िस के डायरेक्टर हैं। वहीं, वांग यी, ब्ब् सेंट्रल कमिटी के पॉलिटिकल ब्यूरो के सदस्य और चीन के विदेश मंत्री हैं। पूरी दुनिया की नजरें सिर्फ इस बहुपक्षी मंच पर नहीं बल्कि सबका ध्यान टिका है उस हाई प्रोफाइल मुलाकात पर जो सम्मेलन से इधर होने जा रही है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।